SHRI BAHUROOPA GARBHA STOTRAM

श्रीबहुरूपगर्भस्तोत्रम्

STOTRAM EDITED
TRANSLATED AND ANNOTATED IN ENGLISH & HINDI
DR. CHAMAN LAL RAINA

SHRI BAHUROOPAGARBHA STOTRAM

श्रीबहुरूपगर्भस्तोत्रम्

त्रिपञ्चनयनं देवं जटामुकुटमण्डितम्
चन्द्रकोटिप्रतीकाशं चंद्रार्धकृतशेखरम्
पञ्चवक्त्रं विशालाक्षं सर्पगोनसमण्डितम्
वृश्चिकैर् अग्निवर्णाभहारेण तु विराजितम्॥

EDITED

TRANSLATED AND ANNOTATED IN ENGLISH & HINDI

by

DR. CHAMAN LAL RAINA

© सर्वाधिकार प्रकाशन विभाग के पास सुरक्षित हैं

रु. 100/—

SWAMI MASTBAB ASHRAM TRUST (Regd.)
Roopali Enclave, Opp. Radha Swami Sat Sang Bhawan,
KARALA (Kanjhawala Road) Delhi-81 Ph.: 011-25952974

CONTENTS

आर्शीवचनम्		v
पुरोवाक्		vii
प्राक्कथन		ix
श्री गुरुवे नमः		xv
Acknowledgement		xix
Introduction		xx
वर्णात्मयोगः	(VARNATMA-YOGA)	1
बहुरूपगर्भः	(BAHUROOPA-GARBHA)	4
संकल्पम्	(SANKALPAM)	15
विनियोगः	(VINIYOGA)	16
करन्यासः	(KARA-NYASA)	17
अङ्गन्यासः	(ANGA-NYASA)	18
प्राणायामः	(PRANAYAMA)	20
ध्यानम्	(DHYANAM)	21
स्तोत्रम्	(STOTRAM)	28
फलश्रुतिः	(PHALA-SHRUTI)	51

आर्शीवचनम्

जय नन्द बाबा **जय लाल बाबा**

यह मनुष्य जन्म हमें भगवान का भजन करने के लिए मिला है। भगवान के नाम स्मरण में असीम शक्ति है।

संत समागम हरी कथा।
तुलसी दुलर्भ दोई।
सुत धारा लक्ष्मी पापी के भी होई।

हम भगवान के पास नहीं जा सकते है। मगर भगवान हमारे पास आते हैं।

दे दहरे का यह फल बाई
भजो राम सब काम बिहाई।

भगवान भगत के पास आते हैं हमारे पास इतनी शक्ति नहीं है हम भगवान के पास जाएं। भगवान दयालु और अपने बच्चे पर हाथ रखते हैं।

जाने सो जोह देही जन्याई
तु ही जान तु ही हो जाई

जब में था तब तू नहीं जब तू है तब मैं नहीं जैसे एक म्यान में दो तलवार नहीं।

–स्वामी मस्त बब जी महाराज

पुरोवाक्

संस्कृत में स्तोत्रसाहित्य का विशेष महत्त्व है। स्तोत्र पूजा-अर्चना के लिए होता है। पूजा का अर्थ है-स्वयं को पूर्ण करना और जन्म लेना-'पूरयति जनयति च इति पूजा'। गुणसागर इष्टदेव के गुणों में से एक या अधिक गुणों को अपने भीतर भर कर गुणसम्पन्न हो जाना ही पूजा कहलाती है। श्रीमद्भगवद्गीता की उक्ति है जिसकी जैसी श्रद्धा होती है वह वैसा ही हो जाता है – 'यो यच्छ्रद्ध स एव सः'। इष्टदेव को सत्यस्वरूप मानने वाला सत्यवादी बन जाता है, कर्मस्वरूप मानने वाला कर्मठ बन जाता है, करुणालु मानने वाला करुण हृदय बन जाता है। गुणानुवाद से नया जन्म इसी तरह होता है।

कश्मीर में शैवदर्शन को प्रमुखता मिली। अनेक शिवभक्तों ने शिव का स्तुतिगान करके अपने इष्टदेव के अनेक गुणों को उजागर किया है। शिव के एक रूप भैरव की स्तुति प्रस्तुत करके इस कृति में शिवभक्तों के लिए बहुत उल्लेखनीय कार्य किया गया है। भैरव को बालरूप माना गया है। शिवभक्तों के लिए यह विशेष आकर्षण का कारण रहा है। प्रो. रैणा ने हिन्दी और अंग्रेजी अनुवाद के साथ स्तोत्र को भक्तों के लिए उपलब्ध कराया है। इसका गायन करके भक्त लोग निश्चय ही लाभ उठायेंगे।

'भैरव' शिव का घोर रूप है। वही घोर रूप भक्तों के लिए अघोर रूप है। स्तोत्र में दोनों रूपों की स्तुति की गई है। स्तोत्र में बीजाक्षरों का भी उल्लेख है और उनकी व्याख्या और विश्लेषण पर बल दिया गया है। इससे स्तोत्र का महत्त्व बढ़ गया है।

आशा है शिवभक्त, प्रो. रैणा के इस श्रम का पूरा लाभ उठायेंगे और इस तरह उनके श्रम को सार्थक करेंगे।

माघ शुक्ल पंचमी
संवत् 2070 वि.
राष्ट्रीय शाके 1935

डा. बद्रीप्रसाद पंचोली
प्राच्यविद्या विशेषज्ञ
स्थान : अजमेर

प्राक्कथन

कश्मीर का शैवदर्शन वास्तव में स्पन्द शास्त्र, प्रत्यभिज्ञा शास्त्र एवं आगम शास्त्रों में निहित है। शैव दर्शन की ये त्रिविध शाखाएं एक दूसरे की पूरक हैं। अतः कश्मीर के शैव दर्शन को त्रिक्शास्त्र से भी अभिहित किया जाता है। त्रिक् दर्शन अध्यात्म से आवृत, स्पन्द से परिपूरित, संवित् से परिमार्जित एवं प्रत्यभिज्ञा से अलंकृत दर्शन है। आगम शास्त्रों में जिज्ञासा, प्रश्नोत्तर शैली में, वार्तिकाओं द्वारा व्याख्या में पायी जाती है। तंत्रालोक के आधार पर साधक, अभ्युदय के लिए शैवी-शिक्षा प्राप्त कर सकता है। यह ग्रन्थ दैवी स्वरूप का अपने आप में स्वछन्द भाव है, जो विमर्श शक्ति का ही स्वरूप है।

कश्मीर शैव दर्शन हमारी आध्यात्मिक पूँजी है, जिसके अध्ययन के द्वारा साधक योग साधना में रत योगी और भक्त विद्या-अविद्या के यथार्थ रूप को जान लेते हैं, वे भक्तजन जड़-चेतन एवं परमार्थ के ज्ञान को आत्मा के अभ्युदय के लिए तथा जगत् के हित के लिए अपने 'स्व' को शैव-साधना में समायोजित करते हैं।

शिव ही प्रकाश-स्वरूप, सर्वव्यापक, करुणामय परमात्मा है। शैव शास्त्रों में यही शिव स्वच्छन्दनाथ भैरव, प्रकाश, बहुरूप-गर्भ आदि नामों से अपने आप में ही पूजित है। यही स्वच्छन्द भैरव की अभिव्यक्ति है।

शिव सर्वान्तर्योगी महादेव है। जिस प्रकार से दयालु पिता अपनी संतान को सभी बाधाओं से दूर रखने की चेष्टा करता है, उसी प्रकार बहुरूप गर्भ में स्थित स्वच्छन्द भैरवनाथ का भी स्वरूप समस्त सृष्टि के लिए है। इसमें व्यष्टि और समष्टि की परिभाषा प्रश्नोत्तर शैली में पायी जाती है।

स्वच्छन्द भैरवनाथ-बहुरूप गर्भ के मंत्र शरीर में वास करते हैं, उसी स्फोट से उत्पन्न मंत्र-शरीर रूपी बहुरूपगर्भ वाक्, प्राण, मन में अवस्थित हो कर भक्त की रक्षा करने में सदा तत्पर रहता है। यही

इसका विश्वमय स्वरूप है। बस यही बहुरूपगर्भ का आश्चर्य है।

सभी दिशाएँ भगवान् बहुरूपगर्भ-स्थित महेश्वर, के अपने ही अंग हैं। दिशाएँ ही उनका अम्बर हैं। अत: शिव दिगम्बर भी कहलाये जाते हैं।

ॐ नम: शम्भवाय च मयोभवाय च।
नम: शंकराय च मयस्कराय च। नम: शिवाय च शिवतराय च।। (यजुर्वेद)

हलाहल विष को पीने के कारण, वे नीलकण्ठ हैं, भरण, रवन, वमन की क्षमता रखने वाले वे शिव भैरव भी कहलाये जाते हैं। यजुर्वेद में वर्णित रुद्र ही त्रिक्दर्शन का 'भैरव' है। प्रत्येक स्तोत्र शास्त्र का अपना ऋषि, छन्द, और देवता होता है। इसी कारण श्री बहुरूपभट्टारक-स्तोत्र के ऋषि वामदेव हैं, छन्द अनुष्टुप्, देवता-परमेश्वर सकलभट्टारक तथा विनियोग के द्वारा आत्मा, वाणी, मन, काया से उपार्जित पापों के निवारण हेतु चतुवर्ग—धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष की सिद्धि के लिए इस स्तोत्र का नियमित पाठ का विधान है। यही आगम शास्त्र की मांत्रिक प्रक्रिया है। स्तोत्र की अपनी गायत्री भी होती है, जिसका सम्बंध बीज मंत्र से होता है। गायत्री का स्तवन सच्चिदानन्द की प्राप्ति के लिए होता है। बीजाक्षर/बीजमंत्र 'बीज का अक्षर रूप है', जिसका क्षरण नहीं होता है। बीजाक्षर, सदैव नित्य है। 'बीजम्' – वि+जन्+ड से इसका वर्ण विवेचन है। बीज-जीवाणु एवं अणु शक्ति से पूरित ध्वनि भी है। बीज से उत्पन्न 'बीज्य' सत्कुलोद्भव अर्थात् सर्वसम्पन्न, कौलमार्ग में प्रवृत्ति कहलाता है। बहुरूपगर्भ स्तोत्र का बीज मंत्र ''अघोरेभ्योऽथघोरेभ्यो घोर घोर तरेभ्यश्च सर्वत: शर्व सर्वेभ्यो नमस्ते रुद्ररूपेभ्य:।।''

यह बीज बहुरूपगर्भ देवता का शरीर है, जिसमें हृदय, शिर, शिखा, कवच, नेत्र तथा अस्त्र का समावेश है। यह जीव की पूर्णा-शक्ति का उत्कर्ष है। बहुरूपगर्भ का रूप कैसा हो सकता है? ऋषि वामदेव ने जिस बहुरूपगर्भ के स्वरूप का साक्षात्कार किया है

वह स्वरूप इस प्रकार है:-

वामे खेटकपाशशारङ्गविलसद्दण्डं च वीणांटिके।
विभ्राणं ध्वज मुद्गरौ स्वनिभदे व्यङ्कं कुठारं करे॥
दक्षस्याङ्कुश-कन्दलेषु डमरून् वज्रत्रिशूलाभयान्।
रुद्रस्थं-शरवक्त्रं इन्दुधवलं स्वच्छन्दनाथं स्तुमः॥

दसों दिशाओं में बहुरूपगर्भ देवता का ही वास है। सभी दिशाएँ तत्पुरुष-शिव के ही अङ्ग है। अतः ऊर्ध्व दिशा-ऊपर में 'क्षं', ईशान रूप वक्त्र (मुख) में आसीन है। उस के लिए नमन हो! मुख के पूर्व में 'यं'-'तत्पुरुष' के लिए नमन हो! दक्षिण में 'रं'-अघोरवक्त्र के लिए नमन हो! उत्तर में 'वं'-वामदेववक्त्र के लिए नमन हो! पश्चिम में 'लं' - सद्योजात के लिए नमन हो! अँगूठों में 'सर्वात्मन्अघोर' के लिए नमन हो! तर्जनीयों में 'थघोरे' ब्रह्म के लिए नमन हो! मध्यमाओं में 'घोर घोरतर ज्वालिनि' के लिए नमन हो!

अनामिकाओं में सभी ओर 'शर्व-सर्वपिङ्गल' के लिए नमन हो!

करतल-करपृष्ठ स्पर्श में, 'रुद्ररूप' दर्भ/कुशा को धारण किये हुए पशुपति के लिए नमन हो।

ॐ अघोर स्वरूप सर्वात्मन् में स्थित, हृदयासीन के लिए नमन हो!

थघोर ब्रह्मन् के लिए सिर में स्वाहा से शब्द निवेदित हो!

'घोर घोरतर ज्वालिन' रूप में वर्तमान शिखा के स्थान पर वषट् ध्वनि से शब्द निवेदित हो!

सर्वत्र 'शर्व सर्वपिङ्गल' रूप से कवच के रूप में निवेदित हो! जिसकी ध्वनि 'हुँ' है।

नेत्रों में वर्तमान 'ज्वं-ज्योतिरूप' वौषट् ध्वनि से निवेदित हो।

विनियोग का नियमनः-

विनियोग एक प्रकार का संकल्प है, यह संकल्प निष्काम, सकाम अथवा सामूहिक जन-कल्याण के लिए भी किया जाता है। विनियोग

पढ़ने से ऋषि, छन्द, देवता, बीज, शक्ति, कीलक की अर्चना की जाती है। इस स्तोत्र के यह छह अङ्ग वास्तव में अपने आप को 'तत्सम्' से 'तद्भव' बनने की प्रक्रिया है। हमारे शरीर में ऋषि का स्थान मस्तिष्क में, छन्द मुख में अर्थात् वाणी में, देवता हृदय में तथा नाभि में बीज, गुह्यस्थान में शक्ति (मूलाधार शक्ति), पैरों में मंत्र, तथा साधना के लिए किसी भी बाधा को दूर करने के लिए न्यास-रूप से विद्यमान हैं। अपने दोनों हाथों से अङ्गों का स्पर्श करना अभीप्सित है। इस प्रकार शक्ति के इन केन्द्रों में न्यास द्वारा स्फूर्ति को उजागर करता है।

साधक के मुख में देवी-देवता का वास होता है। अतः बीजाक्षर के द्वारा उनके प्रभाव को उद्दीप्त करने के लिए इस स्तोत्रराज में 'ॐ क्षं-यं-रं-वं-लं' का उच्चारण किया जाता है। यह बीजाक्षर विशेष क्रम से उच्चारित किये जाते हैं। एक-एक देवता के लिए एक-एक बीजाक्षर 'ध्वनि स्वरूप' है। इसी प्रकार हाथ की अँगुलियों में मूल मंत्र को 'कूट' द्वारा स्फुरित किया जाता है। स्वाहा देवता के लिए आह्वानीय ध्वनि है। 'वषट् शब्द' अग्नि के माध्यम से देवता को हव्य देने के लिए उच्चारित किया जाता है, 'वौषट्' याज्ञिक अभिनन्दन का उच्चारण है, जो देवता को आहुति के लिए आमंत्रित करता है।

बहुरूपगर्भ का वास्तविक भाव शिव के स्वच्छन्द स्वरूप का भैरव रूप है। अतः दैवी मार्ग में प्रवेश करने के लिये ब्राह्मी/शैवी विद्या का अनुसरण करना आवश्यक है। प्राकृतिक, वैकृतिक नियमों के आधार पर हिरण्यगर्भ ही बहुरूप गर्भ है। गर्भ-विश्व, विश्वमय तथा विश्वनियन्ता भी है। बहुरूप का आगमिक रूप स्वच्छन्द भैरव है, जिसमें जीव का वास्तविक स्वरूप राजराजेश्वरी की कृपा है। इसी आधार पर 'सत्यम् और ऋतम्' आसीन है। यही शाक्त के अनुसार विमर्श भी है और प्रकाश भी है।

रवत् कुण्डलिनी गर्भ प्रबोध प्राप्त शक्तयै।
उत्स्फोटना पटुप्रौढ़ परमाक्षर मूर्त्तये।।

स्वच्छन्द भैरव ही कुण्डलिनी को जागृत करने का हेतु है। त्रिवलयाकार कुण्डलिनी के जागृत होने पर ऐसा स्फोट पैदा होता है, जिससे मूढ़-चेतना में अवस्थित कुण्डलिनी-शक्ति, मातृका का रूप धारण करती है। जिससे आदिक्षान्तं-अक्षरमूर्ति अवतरित होकर आगम शास्त्रों की आद्याशक्ति बन जाती है। यही बहुरूपगर्भ की आध्यात्मिक चेतना का बीज रूप से सृष्टि-स्थिति तथा विलय है।

कश्मीर शैवागमों में 'हव्य और कव्य' में समिधा, गुगल/कन्ठगन, क्रुहन तेल/कृष्ण तिल, मरुच्/काली मिर्च, नाबद/नबात, पम्बच/कमलगठ्ठा, ब्रेय/बेर, सर्षप, कर्पूर से अग्नि में आहुति दी जाती है। सामग्री को एक साथ मिलाकर बहुरूपगर्भ के मंत्रों द्वारा भगवान रुद्र का 'यवतिल' द्वारा होम किया जाता है। अग्नि भगवान रुद्र की 'आग्नेय' शक्ति है। इस रुद्र होम में चावल/अक्षत तथा जौ को समान अनुपात में मिलाकर गौ माता के शुद्ध घी द्वारा शिव सहस्त्रनाम की एक हजार आहुतियां दी जाती है। सर्वप्रथम होम के लिये चावल के आटे से निर्मित यंत्ररूपी विग्रह बनाये जाते है। 'कमल'-वेद का प्रतीक है। अग्नि कुण्ड परा-प्रकृति का आसन है, जिसे 'चिदग्निकुण्ड सम्भूता' भी कहते है। धूप-दीप कुशा, पुष्प, जल, लाय्/चावल के फूल, दही, दूध, मधु, शकर और तर्पण एवं अभिषेक आदि के काम में लाये जाते हैं।

होम तीन प्रकार के हैं-यव तिल होम, आज्य होम तथा अन्न होम। प्रत्येक होम के पश्चात अन्नकण द्वारा पितृऋण से मुक्ति की प्रार्थना की जाती है। मस्त बब आश्रम प्रति शुक्लपक्ष अष्टमी को इसी प्रकार का यज्ञ-होम अनुष्ठान, आश्रमों में करते आये है।

... चमन लाल रैना

श्रीगुरुवे नमः

गुरुपाद अनुग्रह यन वॉतिथ प्योम
गुरु चरण अग्रेथ यन श्रुत च्योम
महिमा गन परम शुन्यह वोलस्योम
हिविस ह्युवा ह्युवुय गोम।

हबाकदल, श्रीनगर निवासी स्वर्गीय टिककाक तथा मेरे पूर्वज स्वामी मनकाक जी मोंगा के आध्यात्मिक मित्र के इस 'वाख' से मैं अपने गुरु महाराज स्वामी मस्त बब जी की चरण वंदना करता हूँ। गुरु वंदना करने के पश्चात् स्वामी नीलकण्ठ जी (डब-वाकूरा) निवासी ने अपने गुरु महाराज की स्तुति 'अज्ञान गटे सिर्य प्रकाश छुखा आसवुनुय' के उल्लास में पुकारते हैं:-

यि बु नु ओसुस ती हा ओसुस ज़ानन बु पान।
दयायि चानि यीय ब छुस तीय म्य ज़ोनुम पान॥
रोवमुत लोबुम पज़ि लॅबित नज़ि रावरुनुय।
अज्ञान गटे सिर्य प्रकाश छुखा आसवुनुय॥

गुरु चरणों में कश्मीर के सन्तों की अमृतवाणी एवं भक्तिभाव का पुनः श्रवण व भजन-कीर्तन का प्रोत्साहन मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ, और दिन-प्रतिदिन भक्ति रस की तृषा बढ़ती गयी। आध्यात्मिक प्रवृत्ति व आत्म-चिन्तन का सूर्योदय होने के साथ-साथ ही अपनी वास्तविकता का बोध होने लगा। किसी अज्ञात साधक ने कहा है:-

सदा शिव सॉमियो कर म्योन चारय।
यि ब्रेह्मन ज़न्म मा मेल्यम दुबारय॥
दया धर्मय व्याच़ारय सूत्य वारय।
सहाय रोज़तम त_ बौज़तम ज़ार पारय॥

सन्त कृष्ण जू राज़दान सहज् भाव से अपनी दुर्बल मनःस्थिति की अभिव्यक्ति भगवान् शिव से करते हैं:-

"तारि छुसय गोमुत तार दिम भवसर।"
शंकर यि_ नय आर म्योनुय

शुर्य त् बॉच़ वुछि वुछि ओश त्रावान ज़र
कुस व्यन्य स्यद करि कार म्योनुय
यिन् त्युथ मर् ध्यान् निश गछ़ व्यस्मर
शंकर यिय् नय आर म्योनुय

सन्तों के अनुभव व सहजभाव से निकली अमृतवाणी के भक्ति रस से साधक जितना तृप्त होते हैं, उतनी ही तृषा बढ़ती जाती है मूलतः यह तृषा ही भक्त को साधक और साधक को साधु, तत्पश्चात समाधि की ओर ले आती है। यही सन्तों की अमृतवाणी साधना की शून्यता को प्रदर्शित करती है। असीम और अन्तस्थ अवस्था ही शाम्भवी अवस्था कहलायी जाती है। यही अवस्था बहुरूप गर्भ में भी पायी जाती है। जब साधक एकाग्रत चित्त से साधना में लीन हो जाने के प्रयास में लग जाता है, तो साधक को अपनी विनीत रूपी मानवीय प्रकृति से ऊपर उठने के आभास हेतु शैव दर्शन के मूलाधार से अपनी वास्तविकता का परिचय प्राप्त होता है, और समाधान हेतु विनीत हो कर प्रार्थना करता है:-

वॉराग मछ़ि ज़ोरि सूत्य त्याग खंजर।
दीह अभिमान मद मार म्योनुय॥
ज़िन्द थव वाँसि सूत्य स्यज़र पज़र।
शंकर यिय् नय आर म्योनुय॥

शरण भाव और समर्पण भाव व्यक्त करते हुए कहते हैं:-

छुख हा मूख्यदाता पान् च़य्।
केवल सतुक व्यच़ार दिम॥
यि गछ़ि मे आसुन ती मे दिम।
यूगुक त् ग्यानुक सार दिम॥
शक्ति तु मुक्ति शूबि च़ेय।
मन क्याज़ि तथ प्यठ लूभि मेय
भक्ति दितम, भक्ति दितम
भक्ति म्ये बारम् बार दिम॥

साधना में लीन होने हेतु जटिल भवसागर की व्यथा सन्त की वाणी पथ को प्रदर्शित करती है।

च़रनन हुन्द ध्यान स्वरन येमि भवसर तर ब़ो।
हे च़राच़र गंगाधर शिव शंकर शम्भू।
विष्णु ब्रह्मा छुख च पानय छुक दयालू बोड दय
त्रन भवनन हुन्दे सॉमियो सोन बविनय जय जय
बारह निश्चय लब त्येले येलि शिव शास्त्र पर ब़ो।

साधक सदगुरु की कृपा तथा शिव शास्त्र के अध्ययन करने से भवसागर पार करने का उपाय प्राप्त होने पर उल्लास व्यक्त करता है।

छि अस्तुत म्य दोहोय शिव शिवय कोर।
छि अस्तुत म्य न्यथ शिवय व्रत्त द्वोर॥
छि अस्तुत म्य दोहय ओस शिव सुन्दुय लोल।
छि अस्तुत म्य शिव ज़ोन मॉज तय मोल॥

शैव दर्शन की महान् योगिनी लल्लेश्वरी सारे कश्मीरी जन समूह के मानस पर छायी हुई है। कश्मीरी साधु सन्तों, सूफी दरवेशों की व्याख्या और अपना अनुभव, जन साधारण भाषा में कहे 'वाख' से समस्त कश्मीरी समुदाय को आत्मोद्धार का पथ प्रदर्शित एवं प्रोत्साहित किया। सांसारिक दुर्बलता से झूझते हुए साधक को लल्लेश्वरी के 'वाक्', साधना की सुलभता और शैव दर्शन का समावेश ही योग अवस्था में स्थापित होने का सामर्थ्य प्रदान करती है। संसार द्वंद्व, अस्थिरता तथा मरण के भय से लिप्त साधक के सुलभ उपाय लल्लेश्वरी के 'वाक्' में प्रदर्शित होते हैं।

ग्वर् शब्दस युस यछ़ पछ़ बरे।
ज्ञान् वगि रटि च़्युत त्वरगस॥
यंद्रेय'य शो'मरिथ आनन्द करे।
अद् कुस मरे त् मारन कस॥

लल बो च़ायस स्वमन बाग् बरस।
वुछुम शिवस शकत्थ मीलिथ त् वाह॥
त'त्य लय क'र्म वॉचुस अमर्यथ सरस।
ज़िंदय मरस त् बुय करि क्याह॥

मेरी दृष्टि में बहुरूप गर्भ का पाठ बहुत ही वांछनीय भी है और अध्यात्म से पूर्ण जीव और शिव का समन्वयात्मक स्वरूप भी है। एक साधक यद्यपि अपनी साधना से भयमुक्त होता है, परन्तु आसुरी शक्तियों का प्रभाव भी बहुत ही प्रखर होता है। अत: किसी भी याग अथवा होम से पहले बहुरूप गर्भ का पाठ अनिवार्य भी है और श्रेयस्कर भी।

शिव और शक्ति वास्तव में स्वच्छन्द भैरवनाथ का विश्वरूप दर्शन है। बहुरूपगर्भ इस शृंखला में समस्त ब्रह्माण्ड का विस्तार है। यही नटराज भी है और नटेश्वरी भी है। सारी मातृकायें बहुरूपगर्भ में गर्भित है। यही श्रीचक्रेश्वर का स्वरूप भी है और समस्त शैव और शाक्त सिद्ध पीठों का आदि स्रोत भी है।

मैं डॉ. चमनलाल रैना तथा उनकी सहधर्मिनी श्रीमती जया सिबू जी का भी आभार प्रकट करता हूँ जिन्होंने मुझे यह लेख लिखने के लिए प्रेरित किया। जिसका श्रेय स्वामी मस्तराम जी का शुभाशीष है।

सेवादार हुशुर आश्रम
मोहन कृष्ण मोंगा (काका जी)
प्रपोत्र, त्रिक् दर्शन के ज्ञाता स्वामी मनकाक **मोंगा**

Acknowledgement & Inspiration

I feel myself blessed through the Ashirvachanam of Swami Mast Bab Ji of the Swami Nandlal Ji Yogi's tradition.Swami Ji's kind words have made me to attempt the translation and annotation of the esoteric text--Shri Bahuroopa Garbha,along with its editing on the pattern of the Shaiva Agama.

Shri T .N.Raina of Chawalgam Kashmir/ Vikas Puri,New Delhi,and Prof Ashwani Wanganeo of Purushyar Habbakadal/Bhopal, Madhya Pradesh, provided me the Dhyana Shlokas with Yogic Chakras and the Nitya Pattha of the Trika tradition.

Proof reading was done at the initial stage by Shri Virendra Bhat of the Mast Bab Ashram, followed by Dr G.S.Raina of IGNCA, and Shri Subhash Razdan (Rtd.Asst Professor, Kashmir University).

Shri T N Raina was very particular for its English translation and Shri M K Mongha (Kaka Ji) was very particular to see its translation and annotation in Hindi.

Principal P C Chandawat of Rajasthan College Service, had gone through the Hindi translation and Prof.B P Pancholi--Indologist has examined the Sanskrit Text of the Stotram and suggested the choicest Sandhi,in the Stotram,for being the Shlokas in tune with the Chhandas.

Pandit Niranjan Nath Raina,my Vidya Guru had taught me the esoteric meaning and Pandit Jagannath Sibu had taught me the philosophic meaning with respect to the Bija Mantras,which I had applied in the annotation.

Shri Subhash Razdan provided paintings,based on the Bahuroopa Garbha Stotram.

Shri Satish Bhat was in touch with this project,through the time of the scanning. Shri Surinder Mirza and Shri MK Mongha Ji were instrumental in getting this work published,with the help of Shri Kamal Krishan Raina of the Mast Bab Ashram.

I have tried my best to give an scriptural order,after studying the Agamas of Kashmir to this Stotram, as it is being recited before and after every Kashmiri Pandit Havans within India and abroad.

I have tried to present the Bija Mantra from the Agamic point of view,based on the Sanskrit linguistics.

Phalguna Shukla Ashtami--2014
Janma Diwas of Swami Nand Lal Ji
Karala Ashram,New Delhi.

Dr Chaman Lal Raina

AN INTRODUCTION
Bahuroopa Garbha

When we turn the pages of the Kashmir Shaiva Agamas, we come across the Bahuroopa Garbha Stotram. Our ancestors would recite this Stotram after the morning Sandhya—oblations in their Puja rooms, popularly known as the 'Thokur Kuth'. Since Kashmir Shaivism has influenced the very nerve of Kashmiri Pandit spiritual heritage, it was obligatory for the elders in the family to memorize this Stotram, to avoid any obstacle in their Puja, meditation, pilgrimage etc. and to be self confident in their routine work. It would serve them as their Kavacham/spiritual sheild. A few elderly do recite this stotram in the morning and evening, but it is being recited during Kashmiri Pandit traditional Homas/Yajnas.

For the devotees, it is believed to be a boon, given by Shri Svachhanda Bhairava Natha to protect and achieve the Dharma - Artha-Kama-Mokhsha. The recitation of Bhawani Sahsranama along with the Indrakshi Stotram, during Homa—Yajnas, is still practised in Kashmiri Pandit heritage. Indrakshi Stotram has become a part of the daily Puja even in K.P. diaspora. Indrakshi and the Bahuroopa Garbha are said to be complementary to each other. It is known as the SAMPUTA Patham, as the tradition goes.

What is Bahuroopa Garbha?

Literally Bahuroopa means—multifaceted, and Garbha means—the womb. Bahu also reflects much, many, frequent, numerous, and considerable in quantity. Therefore, the Bahuroopa means variegated and manifold. Garbha stands for an inner apartment, abode of the creation, and a temple. Thus it means that the Bahuroopa Garbha is the multifaceted existence of the Eternal womb, having its source in the Yajurveda, which speaks of Hiranya Garbha as under:

"Hiranya Garbha Samvarttata-agre Bhutasya Jatah Patir Eka-Aasit.

Sa Dhadhar Prithvim dhyaam-Utamaam Kasmai Devaya Havisha Vidyema"

The One, who is the Lord of Eternal Light—the creator of self-illumination, the creator of the radiant Solar system and the luminous world. He is conscient being—the omnipresent One. He sustains the earth, and other planets, still we do not know to whom Devata/ Godhead, should we make our oblations.

..... Yajurveda Chapter 13, Mantra 4.

The Bahuroopa Garbha is an answer to the Vedic Rishi's prayer, to know about the mystery of the Absolute Truth. This Stotram equipped with its own Gayatri and the Bija Mantra has been given to Bhairavi by Rudra Bhairava himself.

Bahuroopa Garbha is an aspiration of the Divine Mother—Bhairavi in the paradox of life. Divine Mother is an inward urge, because she intends to nurse the sleepless children through a discussion about a Kavacham/spiritual sheath. It lends a purport to the renderings of the mind. Bahuroopa Garbha is an absolute potent Mantra, governed by Bhairavi's immense love for the humanity—the torch bearers of the Sanatana Dharma/Eternal truth.

Format of Bahuroopa Garbha:

It is unlike the Upanishadic tradition, where the deliberation takes place between the disciple and the preceptor, about the nature of Godhead, which is termed as 'Brahman'. It is devotional in spirit.

It is a dialogue between Bhairava—the Male principle of Divinity and Bhairavi—the Female principle of Divinity about the welfare of the devotees in general and the initiated Shaivites in particular.

The main subject matter revolves around the aggression caused by the anti divine forces. The human beings suffer from the natural

calamities, with the wrath of wild beasts, vipers and poisonous snakes and other venomous reptiles. Bahuroopa Garbha recitation saves a man from untimely death etc., and grants mental strength to fight fearful odds, which do occur in life.

Svachhanda Natha Bhirava is the subject matter of the Bahuroopa Garbha Stotram. The name suggests the Self willed Bhairava, who is Shiva himself. He is adored as the Chieftain of the Bhairavas. Verily, he is the cause of Brahma—Vishnu—Maheshvara. He is in harmony with his own Shakti—the Bhairavi, who is hereself the innate force behind the Svachhanda roopa, which is Aghora Roopa of Shiva.

His abode is Kailasa, always Shiva is absorbed in his meditative nature there, but Devi Parvati—the spiritual consort is concerned about the welfare of the devotees, who are subjected to the evil doings of anti divine forces, bent upon hurting them, and deviating them from their Dharma. Her focus is on Dharma, both immanent and beyond, which is transcendent in nature. It supervises the measureless movements of the soul, in the realm of boundless silence. Thus it does create the Aghora Mantra—highly potent in day to day working of the devotees.

The Bhairavi wants that the devotees not knowing the multitude of the Mantras of various frequencies, syllables with ascent—descent and balanced one, as described in the Vedas, should keep themselves away from all types of evil forces, and be taught the simple Mantra, easily intelligible, which is but the Mantrik body of the Bhairava Svachchanda Natha.

Shiva explains to her the truth hidden in the word and syllable of the Bahuroopa Garbha Mantra, which is 'All Benign' in nature. It helps the devotees to make the Yajnas fully directed towards the Devatas, when the Stotram is recited before the Yajnas.

All the curses caused by way of deviation, from the volition of 'time', needs a Prayashchita—atonement.

It should be recited in the morning as well as in the evening for bestowing upon the devotees unparalleled peace of mind, higher sense of spirituality and one pointed devotion to Svacchanda – Natha Bhairava. It fills with the glory of happiness, with safe Mudras—clinging of fingers locked in the Shaivi tradition.

The Dhyana Mantra says : The Svachhanda Natha Bhairava is of five faces with fifteen eyes. His aura surpasses the millions and billions of solar galaxies. His Shakti is revered as Bhairavi on her left side. The moon is visible on his face, which looks like a crown on his heads. He holds "Shakti missile" and roams with the "Abhaya mudra", to protect his devotees, and to maintain the cycle of cosmos in motion.

Niceties of the dialogue:

During discussion about the welfare of the devotees—both Shaktas and Shaivas, the Svacchanda Natha Bhairava addresses Parvati as" Devi, Priya, Raja Rajeshvari, Maheshvari and Bhairavi". This suggests that Shiva explains to Parvati that she is the Ultimate Shakti, which controls the whole universe, in your Mother Nature aspect of reality. Verily, this is the jewel word, as seen in the Shakti tradition from Kashmir to Kanyakumari. Our life has opened with divinity, enveloped in a cloak of unsurpassing love, seen in the Ardhanareshwara union of Shiva and Shakti. Human earth still demands that Divinity, and for that very reason Bhairava and Bhairavi become enchanted in giving the Bhahuroopa–garbha Mantra.

Philosophically, this Storam is dualistic in nature, but with an emphasis on the "Bhairava—Bhairavi Eka Ruupah", which is One form of Bhairava and Bhairavi. In the Vibhava/emotional state of Bhairava, Bhairavi is of course, Raja Rajeshwari of acquitance, with a clear concept of differentials, where she supports the universe through

Bhairava in his various forms—literally Bahuroopa, is seen as the Garbha in its eternal form of "Prologue, Mudras-Gayatri-Chhandas/meter, Dhyanam and epilogue". From the Agamic point of view, this stotram is a 'Natyam'—a Divine play played at the mount Kailasa, always curious to explain the existent effects of the earth bound creation, where the sky bound Dakini, Sakini, Lakini etc., and the other embodied souls play their part, but man/woman being the central figure, needs divine intervention, due to his/her limited physical strength and mental poise. Phala-shruti in the Shlokas, as epilogue are for destroying all evil and Asuri Shakti around the Puja/Havan-Yajnya.

Makar-Sankranti-2014 Ajmer **Dr. Chamanlal Raina**

पुस्तक के सम्बंध में

मेरी दृष्टि में 'श्री बहुरूपगर्भस्तोत्रम्' का सम्पादन एवं अनुवाद विद्वान लेखक का श्लाघनीय प्रयास है। इसके माध्यम से भारतीय संस्कृति के शैव दर्शन की मूल प्रवृत्ति को कश्मीर की शैव परम्परा ने अक्षुण्य बनाये रखने में अपनी महती भूमिका निभायी है। शक्तियुक्त स्वच्छन्द भैरव एवं 'बहुरूपगर्भ भैरव' की व्याख्या के माध्यम से इस स्तोत्र में अद्वैत शिव को इस सृष्टि की स्पन्दन शक्ति के रूप में प्रतिष्ठापित किया गया है। शिव आराधना में बीजाक्षर मंत्रों की अर्न्तनिहित शक्ति का अनुशीलन सर्व-साधारण पाठक को अपनी अभिरूचि के साथ कश्मीरी शैव परम्परा को समझने में सहायक सिद्ध होगा, ऐसा मेरा विश्वास है।

दिनांक: 26 जनवरी, 2014 डॉ. प्रकाश चन्द्र चान्दावत
सेवानिवृत्त प्राचार्य,
गर्वन्मेन्ट कॉलेज एजुकेशन, अजमेर

ॐ बहुरूपगर्भाय नमः (नित्य पाठ)

ॐ अस्य श्रीबहुरूपगर्भस्तोत्रमन्त्रस्य वामदेव ऋषि, अनुष्टुप्छन्दः श्रीसकलनिष्कलस्वच्छन्द भैरव देवता, ॐ बीजं ह्रीं शक्तिः हूं कीलंक बहुरूपगर्भस्तोत्रपाठे विनियोगः।

ॐ इस श्रीबहुरूपगर्भ स्तोत्र मन्त्र के ऋषि वामदेव है, छन्द अनुष्टुप तथा श्रीयुक्त–कलाओं से युक्त सकल, तथा कलाओं के बिना अर्थात् अनन्त कलाओं में व्याप्त होते हुए भी निष्कल स्वरूपवाले देवता, बीजावस्था में ॐ, ह्रीं शक्ति से परिपूर्ण, हूं कीलक से कीलित, बहुरूपगर्भस्तोत्र पाठ के लिये विनियोग निवेदित है।

OM! Rishi Vamadeva is the Seer of Shri Bahuroopa Garbha Stotram. Metre is the Anushtup of four lines with thirty two letters/phonemes. The Devata is Shri Svachchand a Bhairava Devata, who is with all the digits of Divinity and is Absolute. The seed is OM, Hrim is Shakti, the 'Kilaka'–nailing is 'Hum' sound. Through these vibrating constituents the Baharoopa Garbha is invoked.

अथ न्यासः

The Nyasa

ॐ वामदेव ऋषये नमः शिरसि, अनुष्टुप्छन्दसे नमः मुखे, स्वच्छन्दभैरवदेवतायै नमः हृदि, ॐ बीजाय नमः नाभौ, ह्रीं शक्त्यै नमः गुह्ये, हुं कीलकाय नमः पादयो, स्तोत्रराजपाठे विनियोगाय नमः सर्वाङ्गेषु। *न्यास करना*

वामदेव ऋषि का शिर/सिर में नमन हो! मुख में अनुष्टुप छन्द के लिये नमन हो! हृदय में स्वच्छन्द भैरव देवता के लिये नमन हो! ॐ रूपी बीज के लिये नाभि में नमन हो! गुह्य अङ्ग में 'ह्रीं' शक्ति के लिये नमन हो, तथा पादों/पैरों में 'हुं' कीलक के लिये नमन हो! सभी अङ्गों में स्तोत्रराजपाठ के विनियोग के लिये नमन हो!

ॐ ईशान वक्त्राय नमः (ऊर्ध्वायै)

यं - तत्पुरुष वक्त्राय नमः (पूर्व)

रं - अघोर-वक्त्रायनमः (दक्षिणे)

वं - वामदेव-वक्त्राय नमः (उत्तरे)

लं - सद्योजात-वक्त्राय नमः (पश्चिमे)

अघोरेभ्यः सर्वात्मने अङ्गुष्ठाभ्यां नमः ऽथघोरेभ्यः ब्रह्मन्यै तर्जनीभ्यां नमः। घोरघोरतरेभ्यः ज्वालिः मध्यमाभ्यां नमः। सर्वतः शर्व सर्वेभ्यः पिङ्गलाय अनामिकाभ्यां नमः। नमस्ते रुद्ररूपेभ्यः दुभट्ट पशुपतये करतल करपृष्ठाभ्यां नमः

ॐ अघोरेभ्यः सर्वात्मने हृदयाय नमः। ऽथघोरेभ्यः ब्रह्मने शिरसे स्वाहा। घोरघोरतरेभ्यः पिङ्गलाय कवचाय हूं। ज्वंसः ज्योतिः रूपाय नेत्राभ्यां वौषट्। नमस्ते रुद्ररूपेभ्यो महा दर्भधाय पशुपतये अस्त्राय फट्।

नोट : इसी अघोर मंत्र से पूरक, कुम्भक तथा रेचक एक बार, दो बार, तीन बार क्रमशः पढ़ कर ध्यान के साथ प्राणायाम करें।

- महात्मा काशीनाथ कौल-त्रिकाश्रम फतेह कदल के सौजन्य से द्वारा पं. त्रिलोकी नाथ रैना, विकास पुरी, दिल्ली

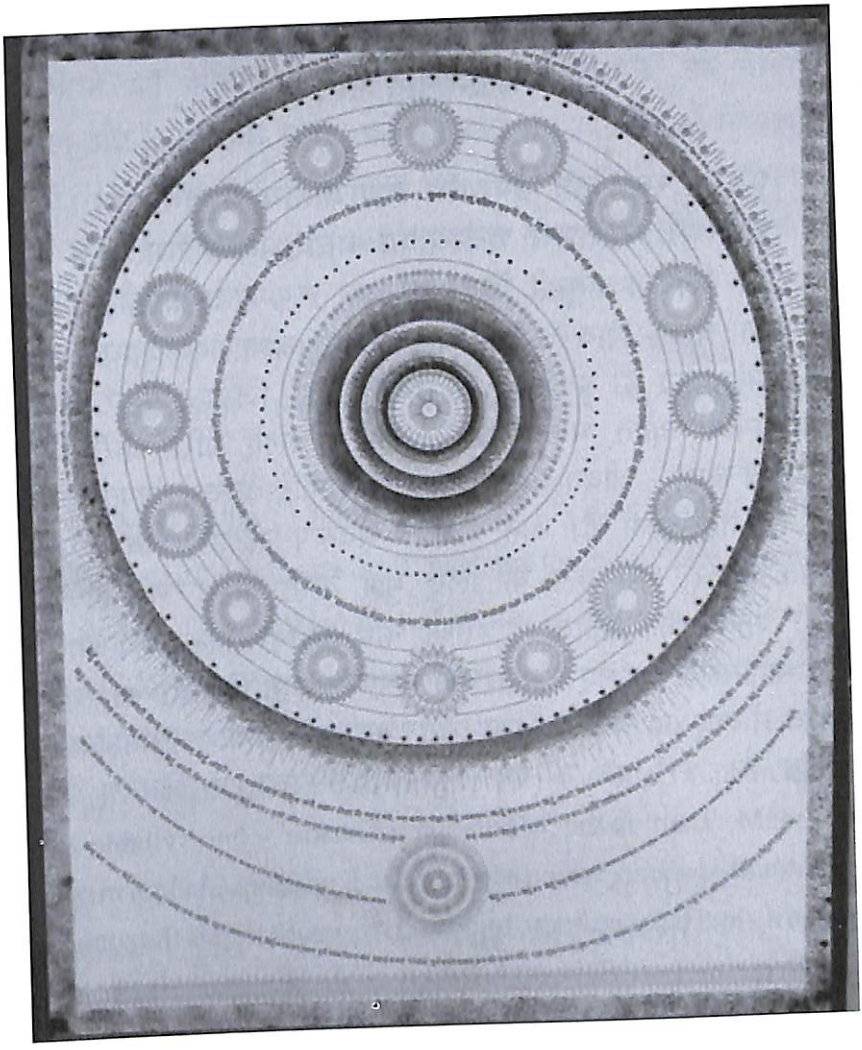

ॐ बहुरूपगर्भाय शिवाय नमः

ॐ वं वामदेवाय नमो ज्येष्ठाय नमः श्रेष्ठाय नमो रुद्राय नमो कालाय नमः कलविकरणाय नमो बल विकरणाय नमो बलाय नमो बलप्रमथनाय नमः सर्वभूतदमनाय नमो मनोन्मनाय नमः

ॐ लं सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमो नमः।
भवे भवे नातिभवे भवस्य मां भवोद्भवाय नमः॥१॥

ॐ 'लं' पञ्चमुखी शिव का एक रूप सद्योजात है। तपस्या से युक्त चेतना शिव की योगाग्नि है। लं-बीजाक्षर मूलाधार चक्र का तापस केन्द्र है। सद्योजात को नमस्कार हो, जिसकी प्रखर अथवा तीव्र प्रकर्ष ज्योति भक्तों को साधना के लिए प्रेरित करें! शिव का 'भव रूप' - जीवन, जगत्, कल्याण, समृद्धि, ऐश्वर्य, जगत-कारण का ही तत्स्वरूप है। अतः 'भव' भवरूप से ही, भव रूप में स्थित होकर, भव रूप के लिए मुझे प्रेरित करें! 'लं' बीजाक्षर ऐन्द्री शक्ति का प्रतीक है, तथा कर्म प्रदान-काल विभाजन के दस भागों/रूपों के लिए 'लकार' के रूप में प्रयुक्त होता है। 'ल'-छन्दः शास्त्र में लघु का वाचक, तथा आगमशास्त्र में लक्ष्मी का प्रतीकात्मक संकेत है। 'लं' का उद्गम 'लृ' वैदिक स्वर से निकला है।

OM, 'Lam' is the 'Mooladhara Chakra' - one syllable Bija Mantra/seed sound, which activates the Kundalini Chakra, in order to purify and balance body, mind and Atman/Self. It is the sound of 'Sadhyojata'– Lord Shiva. It is freshly evolved consciousness. I pay my obeisance to 'Sadyojata' for bestowing upon me the grace of illumination. He is the 'Bhava' – existent one, the cause of existence, for the existence and by existence itself and is of the eternal source of existence.(1)

ॐ वं वामदेवाय नमो रुद्राय नमः कालाय नमः।
सर्वभूत दमनाय नमो मनोन्मनाय नमः।।2।।

ॐ 'वं' वामदेव का बीजाक्षर है। रुद्रदेवता को नमन हो वामदेव को नमन हो! काल को नमन हो! सभी प्राणियों को दमन करने की शक्तिधारण करने वाले 'सर्वभूतदमन' को नमन हो! 'मन और उन्मन' के संयोग को नमस्कार हो! वामदेव, शैवीध्यान में सदा 'वं' बीज का जप करते हैं। चक्रों में 'वं' का स्थान स्वाधिष्ठान है। 'रुद्ररूप' शिव का कालाग्नि स्वरूप है। जिस शक्ति के द्वारा कामदेव को तपस्या भङ्ग करने के अपराध से भस्म किया गया, वही उन्मत्त अवस्था कहलायी जाती है। वं-वायु, वरुण, समुद्र का शब्दात्मक वर्ण है। वं-मंत्र, वंशवृद्धि का प्रतीक भी है।

OM, 'Vam' in the 'Svadhishthana Chakra' – one syllable Bija Mantra/Seed syllable, activates the Kundalini at the navel/Sacral space. It is the Sound of 'Vamadeva' - Lord Shiva, who is Rudra/terrific as well as 'Kaala' - the Time Eternal. My obeisance to the Lord, who controls the all Sentient beings and to the beings, whose potential is to act through mind alone. Verily, 'Bahurupa' is those Supermind of all the Devas.(2)

ॐ रं अघोरेभ्योऽथ धीरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः।
सर्वेभ्यो शर्व सर्वेभ्यो नमस्ते रुद्ररूपेभ्यः।।3।।

ॐ 'रं' अघोर, घोर तथा घोरतर के लिए नमस्कार हो। ॐ शर्व-' शृणाति प्रलयकाले सर्व संहरतीति', प्रलय काल में समस्त जगत् का संहार करने वाले तथा अंकुश लगाने वाले रुद्ररूपों में अवतरित 'रं' बीज है। शिव के अग्नि तत्त्व से युक्त स्वच्छन्द भैरव रूप को नमन् हो! ।।3।।

OM, 'Ram' in the Manipuraka Chakra – one syllable Bija Mantra/Seed syllable, which activates the solar plexus. It is the sound of 'Aghora' - not fearful Shiva, but very calm and harmonious Lord. He is verily, the fearful one, even most dreadful and even transcends that fearful form. He is 'Sharva' - the essence of prominence in the Devas. He is of the dark hue among all the eleven Rudras. (This is the Bija Mantra of the Bahurupa-garbha).[3]

ॐयं तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि।
तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्।।4।।

ॐ 'यं' – तत्पुरुष के लिए चिन्तन करते हुए उस महादेव का जाप करते हैं, जो हमारे बुद्धि तत्त्व को चारों ओर से उद्दीप्त करें! (बहुरूपगर्भ स्तोत्रमंत्र का यह गायत्री स्वरूप है। 'यं' बीजाक्षर–चिदात्मा का बीजस्वरूप है, जिसमें बाह्य–आभ्यन्तर का निरुद्ध अर्थात् संयम, स्थिर भाव में रहता है। तत्पुरुष – 'तत्त्वमसि' का विग्रह स्वरूप है। तत्पुरुष महादेव का एक स्वच्छन्द स्वरूप है। यह मंत्र स्वच्छन्द गायत्री नाम से गायत्री श्रेणी में समादृत एवं प्रतिष्ठित है। गायत्री के जाप से मन के सन्ताप दूर हो जाते हैं।)

OM, 'Yam' in the Anahat Chakra – one syllable Bija Mantra/ Seed syllable, which activates the heart region. It is the sound of 'Tatpurusha' - that Eternal self different from the embodied soul. I meditate upon Him to know His exalted Truth, unimaginable and unperceivable through senses and mind. May that 'Mahadeva' grace me with the intellect, so that I may understand the ultimate Truth about Rudra!(4)

(This is the Gayatri Mantra of the Bahurupa-garbha)

ॐक्षं ईशान सर्व विधानामीश्वरः सर्वभूतानां ब्रह्माधिपर्ति ब्रह्मणोऽधिपर्तिः ब्रह्मा शिवो मे अस्तु सदा शिवोऽम।।5।।

ॐ 'क्षं' बीजाक्षर ईशान स्वरूप है। ईशान सभी विधाओं

का ईश्वर है। सभी प्राणियों के लिए ब्रह्मभाव में अधिपति - नियंत्रक है। 'स' पूर्ण 'ब्रह्म' का भी अधिपति है। ब्रह्मा ही शिव है। शिव ही ब्रह्म स्वरूप से मुझ में निवास करें! शैवी और ब्राह्मी अवस्था का संयोग ही 'क्षं ईशान' का साक्षात्कार है। यही शिव स्वयं-सिद्धयोग स्वरूप है।

OM, 'Ksham' is the void state of sound, a disappearance which is the 'Shnuya' state of mind. It activates the remaining Chakras from the throat to the Sahsra-ara in the Crown of the Skull. The presiding deity is Ishana. He is the Supreme lord of all the manifestation from a microbe to the most exalted Brahma. He is the Master architect of all the forms of modules of the Shruti, Agamas and Tantras. He is the Supreme self of the Absolute 'Brahman, who is Shiva, thus residing in my being, so that I may beeome Shiva myself. 'Kshma-Ishan' is Ishvara of all spiritual Vibrations.(5)

''लं वं रं यं क्षं'', is interpretted in the 'Chakra-System' as :

ॐ यं is काकिनी - Kakini, रं is लाकिनी - Lakini, रं is डाकिनी-Dakini, वं is राकिनी - Rakini and क्षं is मालिनी - Malini.

Kakini is 'Svarabhakti' – devotion through sound. *Lakini* is 'Sakalasukhakari – the giver of all comforts. '*Dakini* is Shevata Raktda dhani – the giver of dread to the Asusas. Rakini is 'Abhimata phalada' – the giver of desired fruits in the Svachhanda Natha Bhairava Puja. 'Ksham' is Malini, suppressing Rakshas. (These are also the forms of Tripurasundari in her Benign Lalita form).

चक्रों में 'लं वं रं यं क्षं' - ॐ है। यं - काकिनी स्वरभक्ति है। रं - लाकिनी सकल सुखकर्तृ है। लं - डाकिनी श्वेतरक्त त्रिनेत्रधारिणी अभय देने वाली शक्ति है। वं - राकिनी, अभिमत फलदायिनी शक्ति है। क्षं - मालिनी, परिपूर्णता की शक्ति है। शिव-शक्ति का प्रतीक है।

ॐ श्री गणेशाय नमः

ॐ श्री गणेश को नमस्कार हो।

OM, Prostration to Shri Ganesha!

ॐ ब्रह्मादिकारणातीतं स्वशक्त्यानन्दनिर्भरम्।
नमामि परमेशानं स्वच्छन्द वीरनायकम्।।1।।

ब्रह्मा–विष्णु–महेश्वर कारणों से भी आगे अर्थात् अनन्त ही जिसका स्रोत है, अपनी शक्ति ही जिसके स्वरूप का आदिकारण है; उस परमेश्वर स्वच्छन्द वीर नायक को मैं नमन करता हूं। स्वच्छन्द स्वातन्त्र्य शक्ति है। ब्रह्मादि त्रिकारणों का जो दाता है तथा उन कारणों पर जिसका नियंत्रण है, वही उसका वीर भाव है। स्वच्छन्द भैरव दानवीर, धर्मवीर, दयावीर तथा युद्धवीर है। इन उपाधियों से युक्त स्वच्छन्द भाव के कारण बहुरूपगर्भ वीर नायक है। भैरव सदा शक्ति–भैरवी का अभिन्न अङ्ग होने के कारण उसी के आनन्द में रम जाता है। यही इसकी स्वच्छन्द शक्ति है।।1।।

I make my prostration before Prameshvara–the most exalted Divine Being, whose nature is of the Svachhanda–very bright and transparent. He is having the realm of His 'Free-will'. He is Vira–the mighty and powerful, with the sentiments of being all heroic to destory the Asuras. He is 'Nayaka' – the preeminent being in the whole sphere of the Bhairvas. He is beyond the cause and effect of the manifestation of Brahma, Vishnu and Shiva. He is 'Nirbhara'–abounding in His own delight of 'Sva-Shakti', the inherent Energy, which is 'Samvit Shakti'.(1)

कैलासशिखरासीनं, देवदेवं जगद्गुरुम्।
पप्रच्छ प्रणता देवी, भैरवं विगतामयम्।।2।।

कैलाश पर्वत के शिखर पर आसीन, देवादिदेव जगद्गुरु भैरव स्वच्छन्दनाथ को देवी भैरवी ने पूछ लिया .....।

The Bhairva is seated on the peak of the Mount Kailasa. The Divine Mother prostrated before the Lord, who is 'Devadi Deva' – the Lord of all the Devatas, and also the Divine preceptor. Thus the Devi enquired of him. (2)

श्री देवी उवाच

प्रायश्चित्तेषु सर्वेषु समयोल्लंघनेषु च।
महाभयेषु घोरेषु तीव्रोपद्रव भूमिषु।।3।।
छिद्रस्थानेषु सर्वेषु सदुपायं वद प्रभो।
येनायासेन रहितो निर्दोषश्च भवेन्नर।।4।।

श्री देवी बोली - सभी प्रायश्चितों में समयाचार संहिता (पद्धति) के उल्लङ्घनों में, महाभयों में, भयानक स्थितियों में, भूमि पर तीव्र उपद्रव-दुर्घटनाओं में क्लेश, महामारी इत्यादि परिस्थितियों में, सभी छिद्र स्थानों में - अर्थात् फाड़, दरार, कटाव ऐसे बिन्दु जहां से मार की जा सकें, उनके दुष्प्रभाव से बचने के लिए हे प्रभु! सदुपाय ऐसा बताये, जिससे मनुष्य बिना किसी प्रयास के कुशलपूर्वक रहे। साथ ही मनुष्य में किसी भी प्रकार का दोष न आ जाएं।।3-4।।

SHRI DEVI SAID

How a person can be released from all the Sins through 'Prayashchitas' of atonements and expiations, also from being indifferent to the 'Time'? How can he/she come out of the horrible threats, when great calamities take place on the earth planet? When one is caught up amidst the splitted places, filled with holes, valconic sights? O Lord! Tell me the wayout how to get rid of all these problems, without being oneself frightened, and be not subjected to fatigue, exertion and striving. Thus through recitation the person would be-

come free of all the evils.(3-4)

श्री भैरव उवाच

श्रणु देवि परं गुह्यं रहस्यं परमाद्भतम्।
सर्व पापप्रशमनं, सर्वदुःखनिवारणम्।।5।।

श्री भैरव बोला - हे देवी! मैं अद्भुत रहस्य तुझे सुनाता हूँ..., यह रहस्य सभी पापों को शमन करता है तथा सभी दुःखों का निवारण करता है, अर्थात् दुःखों को दूर करता है।।5।।

O Devi! Listen to the most wonderful and mysterious secret, which makes a man free from all the sins. It wards off painful and unpleasant distresses.(5)

प्रायश्चित्तेषु सर्वेषु तीव्रष्वपि विमोचनम्।
सर्वछिद्रापहरणं सर्वार्तिविनिवारकम्।।6।।

प्रचण्ड, उग्र, दारुण कठिनता से मुक्ति पाने के लिए तथा सभी प्रायश्चितों के निवारण हेतु सभी छिद्रों को अच्छिद्र बनाने के लिए...।

It will do away with all the expiations, and make one free from all the violent and dreadful acts. All the loop-holes will be filled and taken care of all the diseases and afflictions.(6)

समयोल्लंघने घोरे जपादेव विमोचनम्।
भोगमोक्षप्रदं देवि सर्वसिद्धिफलप्रदम्।।7।।

समयाचार के उल्लर्घन होने पर, घोर भयानक दुष्प्रभावों से विमुक्ति पाने के लिए केवल इस स्तोत्र का जप ही साधन है। हे देवी! भोग और मोक्ष को प्रदान करने वाला तथा सभी सिद्धियों को देने वाला यह जप है।।7।।

Only through Japam/recitation of the name of 'Shiva' as 'Bhairava'; one can be freed from the curse while deviating from the

transgression in violation of 'Time which is Samaya'. Thus Svachhanda, who is the Master of all the 'Ashta Bhairavas' thus and then bestows upon perfection, enjoyment and 'Moksha' – final liberation. O Devi! All is attributed to the Divine name of 'Aghoranatha'.(7)

शतजाप्येन शुद्धयन्ति महापातकिनोऽपि ये।
तद्‌र्धं पातकं हन्ति तत्पादेनोपपातकम्‌॥8॥

महापातकी–पापकर्मी भी सौ बार जप करने से शुद्ध हो जाते हैं। उस का आधा भाग – पचास बार जप करने से पाप की समाप्ति होती है तथा चौथा भाग – पचीस बार जप करने से न्यूनतम पापों से भी मुक्ति होती है॥8॥

Those who have committed enormous sins, get purified through the 'Japam' when recited a hundred times. Half of the 'Japam' – the recitations i.e. fifty times destroy the sins, however great those may be. The quarter portion of the 'Japam' would cleanse a man with minor sins and crimes.(8)

कायिकं वाचकं चैव मानसस्पर्शदोषनम्‌।
प्रमादात्‌ इच्छया वापि सकृज्जाप्येन शुद्धयति॥9॥

कायिक – शारीरिक, मानसिक – मन से सम्बंधित, वाचिक–वार्तालाप द्वारा, तथा स्पर्श द्वारा अर्जित पाप, चाहे प्रमाद से अथवा इच्छा से जप किया गया हो, केवल जप करने से शुद्धि हो सकती है।

He who recites the 'Japam' instantaneously, gets free from all the evil consquences, caused through touch, mind, tongue and/or with physial body. Even if, the sins are committed either through ignorance, or selfwise, get purified through 'Japam'.(9)

यागाररम्भे च यागान्ते पठितव्यं प्रयत्नतः।
श्रोतव्यं च सदा भक्त्या परं स्वस्त्यनं महत्‌॥10॥

याग – देवता को उद्देश्य करके, अग्नि में द्रव्य–त्याग अर्थात आहुति, यज्ञ, वैश्वदेव आदि कृत्यों के आरम्भ में तथा याग के अन्त पर प्रयत्न करके इस स्तोत्र का पाठ करना चाहिए। भक्ति भाव से इसका श्रवण करना चाहिए। यह पाठ अवश्य ही 'स्वस्ति–प्रदान' अर्थात् आशीष, क्षेम, कल्याण, पुण्य वृद्धि करने वाला है।

This laudation should be recited in the beginning of the 'Yajnas', with due deliberations. It should be listened to with all devotion. It is a very powerful and grand 'Stotra' for bestowing upon all peace, progress and well being.(10)

नित्ये नैमित्तिके काम्ये परस्यापित्मनोऽपि वा।
निश्छिद्रकरणं प्रोक्तमभावपिरिपूरकम्॥11॥

यह स्तोत्र छिद्रों को निश्छिद्र करने वाला है, नित्य कर्म में, अथवा इष्टकामना की सिद्धि प्राप्ति में, अथवा किसी के निमित्त किया गया हो, या आत्मा की शुद्धि के लिए हो, यद्यपि कहीं–कहीं उसमें छिद्र–न्यूनता आई हो, खण्डित हुआ हो, तो इस स्तोत्र के पाठ मात्र से किसी प्रकार की न्यूनताएं समाप्त होती है। अतः पूर्णतः की ओर लेता है।

In case of any deficit occured while performing obligatory, occasional rituals or desired/coveted invocations, due to some un-knowable ommissions, this stotra/laudations ignores the lapses, if any and thus making the devotion with its recitation fully perfect.(11)

द्रव्यहीने मंत्रहीने ज्ञानयोगविवर्जिते।
भक्तिश्रद्धाविरहिते शुद्धिशून्ये विशेषतः॥12॥

होम–हवन–याग–यज्ञ में यदि द्रव्य की न्यूनता हो, मंत्र के पढ़ने में मंत्र का वास्तविक ज्ञान न हो, भक्ति और श्रद्धा से

रहित हो, विशेष कर शुद्धि में शून्यता हो - अर्थात् चारों ओर से न्यूनता ही हो....,

Those who can not afford the ingredients for 'Yajnas', or are not intelligible to the Mantras and being far away from 'Jnana and Yoga', also devoid of devotion, with no trust in the revelation; and engrossed especially with the impugnities ....,(12)

मनोविक्षेपदोषे च विलोमे पशुवीक्षिते।
विधिहीने प्रमादे च जप्तव्यं सर्वकर्मसु॥13॥

मन में विक्षेप - व्याधि, प्रदोष काल में, मनन करने की शक्ति न होना, संशय प्रमाद, आलस्य, अविरति/लोभ, भ्रान्ति/भ्रम, अलब्धभूमिकत्व/अलब्ध समाधि-स्थिति, अनवस्थित तत्व/मानसिक चपलता, जो नौ कारण है तथा पशुवत व्यवहार करने वाला, विधिहीन, प्रमाद/असावधानी एवं व्यग्रता से युक्त व्यक्ति को सभी कार्यों के दोषों से मुक्त करने के लिए इस जप का अनुष्ठान अभीप्सित है।

Moving with the depression of mind, doing abnormal actions, behaving like animal nature, should recite in the form of 'Japam'. Also, when one is not aware of the ritualistic procedures, be in negligence, confusion and distraction; the recitation of the 'Aghora Mantra' should be recited with devotion.(13)

नातः परतरो मंत्रो नातः परतरः स्तवः।
नातः परतरा काचित् सम्यक् प्रत्यङ्गिरा प्रिये॥14॥

हे प्रिये! इस के समान न ही कोई मंत्र है, और न कोई स्तव ही इसके समान है। न ही कोई प्रत्यङ्गिरा - देवों तथा मानवों के मध्य सम्यक् स्तोत्र है। (ऋग्वेद के ऋषि अङ्गिरस जिसने ऋग्वेद के अनेक सूक्त रचे हैं, और जिसने ब्रह्मविद्या का प्रवर्त्तन किया), अतः यह स्तोत्र एवं जप सम्यक् रूप से वन्दनीय है।

O Priya Bhairavi! No Mantra or Stotra – laudation excells this 'Aghora Mantra'. There is no 'Pratyangira; which can transcend this laudation. 'Pratyangira' means the resultant effects caused by approach, through body, mind and action between Devatas and Asuras.(14)

इयं समयविद्यानां राजराजेश्वरीश्वरि।
परमाप्यायनं देवि! भैरवस्य प्रकीर्तितम्॥15॥

हे राजराजेश्वरी! इसी स्तोत्र को 'समयाचार' की विद्या भी जानना चाहिए। हे देवी! भैरव के द्वारा कही हुई यह विद्या आप्यायनीय-पुष्टि को देने वाली है। (समयाचार कादि विद्या से सम्बंधित है), वही राजराजेश्वरी के पञ्चादशाक्षर स्वरूप है।

O Ishvari – the Supreme Sovereign Bhairavi! This is the quintessence of all the 'Samaya Vidya', which is 'Samayachara' system of the Agama Shastras, an established rule of conduct, for reciting the 'Stotram' during unexpected and saddening situation. It is panacea for exigencies. O Devi! This laudation is verily, liked by the Bhairava, as has been told by the Bhairava Himself.(15)

प्रीणनं सर्वदेवानां सर्वसौभाग्यवर्धनम्।
स्तवराजमिमं देवि शृणुष्वावहिता प्रिये॥16॥

सभी देवताओं का यह प्रिय स्तोत्र सर्वसौभाग्यवर्धक है। यह सभी स्तोत्रों में स्तवराज है। हे प्रिये! इस स्तोत्र को अत्यन्त प्रेम से सुनना चाहिए।

O Priya – the dearest one! This 'Stavaraja' Stotram/laudation makes all the Devatas satisfied, as it is very dear to them. It gives all dignity, fortune, auspiciousness and progress. O Devi! Therefore, listen to this laudation with all systemetic devotion and procedure.(16)

अथ संकल्प मंत्रः

Now the Sankalpam..., a ritualistic resolution.

अस्य श्रीबहुरूप-भट्टारकस्तोत्रस्य वामदेव ऋषिः, अनुष्टुप्छन्दः श्रीबहुरूपभट्टारको देवता (परमेश्वर सकल भट्टारको देवता) आत्मनोवाङ्मनःकायोपार्जितपाप-निवारणार्थं चतुर्वर्गसिद्ध्यर्थं पाठे संकल्पः।

संकल्प

इस श्रीबहुरूप भट्टारक स्तोत्र के ऋषि वामदेव, छन्द अनुष्टुप्, श्री बहुरूपगर्भ भट्टारक देवता (परमेश्वर सकल-कलाओं से युक्त भट्टारकदेवादिदेव), आत्मा, वाणी, मन, काया से उपार्जित/अर्जित पापों के निवारण करने के हेतु, चतुवर्ग की सिद्धि प्राप्ति के लिए पाठ में संकल्प किया जाता है।

संकल्प मंत्र आदि का कर्म विशेष में प्रयोग की विधि है। संकल्प का शाब्दिक अर्थ - सङ्कल्पमात्रोदित सिद्धः यस्ते/इच्छा, विचार, चिन्तन, धार्मिक कृत्य करने की प्रतिज्ञा एवं चेतन वृत्ति है।

I offer the recitation, as preseribed in the 'Viniyoga', an application for obtaining perfection for the evolvement of body, mind and soul; also for purifying the embodied soul from all the sins committed wiitingly or unwittingly. The Rishi of the 'Bahu-Roopa-Bhattarak-Stotra' is 'Vama Deva'. The Mantra is of the 'Anushtup' metre of 32 syllables in four lines. The 'Devata is Shri 'Bahu Roopa Bhattaraka' – who is 'Multifaceted Venerable Sun' among all the Deities, also revered as the 'Manifested Lord of all the worlds.'

Procedure for the Sankalpa :-

Be seated before Lord Shiva/Svachchanda Bhairava .... Vatuka Bhairava, or Shivalingam, facing the east or the north direction. Recite

this Sankalpa Mantra,pouring water in the pot meant for 'Nirmalya' - the water oblation for the 'Abhishekam'/pouring water on the Deity. The devotee must be in the 'Siddha-Asana' – a Yogic posture, or the 'Padma-Asana'– lotus posture.

Note: Water used for 'Nirmalya' making the Murti/Lingam clean with water, is to be offered to the river. If that is not possible, it should be poured on plants or tree.

अथ विनियोगः

अस्य श्रीमदघोरभट्टारक-सकल-स्वच्छन्द-भैरवमंत्रस्य श्री कालाग्नि रुद्रभैरव ऋषि पंक्तिश्छन्दः सकल भट्टारकाघोरमूर्ति देवता ॐ बीजं, ह्रीं शक्ति, कुरुकुरु कीलकं, श्रीबहुरूपगर्भदेवता प्रीत्यर्थं पाठे अथवा जपे विनियोगः

विनियोग

इस श्रीमद्घोर-भट्टारक-सकल-स्वच्छन्द भैरव मंत्र के श्रीकालाग्नि रूद्रभैरव ऋषि हैं पंक्ति छन्द में ग्रंथित, सकल भट्टारक अघोर मूर्ति देवता है। ॐ बीज, ह्रीं शक्ति, कुरू कुरू कीलक, श्रीबहुरूपगर्भ देवता की प्रसन्नता के लिए पाठ/जप का विनियोग किया जाता है अथवा डाला जाता है। विनियोग का शाब्दिक अर्थ है....., बभूव विनियोज्ञः साधनीयेषु वस्तुषु। किसी धार्मिक कार्य के लिए कार्यरत होना है।

This 'Viniyoga' – application is to please 'Shri Bahuroopa garbha Devata', who is 'Aghora' Shiva in compassionate form, 'Bhattaraka', most venerable, 'Sakala' – all existent 'Svachhanda' – crystal like embodiment of self - will, 'Bhairva', with the qualities of 'Bharana/ creativity, 'Ravana'/sustenance, 'Vamana'/dissolution; perfected with the Mantra – a seed syllable evolved from the Maheshvara Sutra.

The Rishi is 'Shri Kala - Agni - Rudra Bhairva', which is inherent in the Time Eternal, the celestial fire. Rudra is vibrant, forceful, roaring deity. The metre of the Stotra is in the 'Panktih' – a five fold metre consisting of 5 'padas' of 8 syllables i.e. Shloka of 40 syllables. The Devata is 'Sakala – manifested, 'Bhattaraka', illumined like the sun, 'Aghora' is serene, 'Murti' is living presence, in the 'Devata'/divinity. The seed is OM/AUM, 'Shakti' is 'Hrim', 'Kilaka'/nailing is with 'Kuru-Kuru', which is a medicinal herb, a Himalayan plant.

This is the application for the recitation of the 'Patha', and or for the Japam.

Note: Patha is reciting of the Stotram and Japam is to repeat the 'Aghora Mantra'.

अथ करन्यासः

Holding of Mantirk energy in hand.

अघोरेभ्यो - अंगुष्ठाभ्यां नमः
ऽथघोरेभ्यो - तर्जनीभ्यां नमः
घोरघोरतरेभ्यश्च - मध्यमाभ्यां नमः
सर्वतः - अनामिकाभ्यां नमः
शर्व सर्वेभ्यो - कनिष्ठिकाभ्यां नमः
नमस्तेरुद्ररूपेम्यः - करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः

करन्यास

दोनों अंगूठों में 'अघोर', तर्जनीयों में 'ऽथघोर', मध्यमाओं में 'घोर-घोर-तरेभ्यश्च', 'सर्वतः अनामिकाओं में' कनिष्ठाकाओं में 'शर्व-सर्वेभ्यो', करतल और करपृष्ठ में नमस्ते रुद्ररूपेभ्यः न्यास रूप में स्थापित हैं। न्यास का शाब्दिक अर्थ चित्रित ज्ञान, दैवी

शक्ति को अङ्गों में व्यस्त करना है, एवं दैवी शक्ति को अंगों में समेटना है।

(Procedoure : (1) Touch both thumbs with respective index finger, and recite 'Aghorebhyo Namah'. Anghnsthabyam (2) Touch the index fingers with respective thumbs, and recite 'Thagorebhyo' 'Tarjaniyabhyam Namah'. (3) Touch the middle fingers with respective thumbs and recite 'Ghoraghora-Tarebheya Schcha' 'Madhyamabhyam Namah' 'Sarvatah Anamikabhyam Namah.' (4) Touch the little fingers with thumb and recite 'Sharva-Sarvebhyo Kanishtakabhyam Namah'. (5) Touch both the palms and reverse the hand, recite 'Namaste Rudraroopebhyah Karatala Karaprishtabhyam Namah' (The devotes must put the vibration of the Mantra in the fingers of the hand, including the palm and upper skin/part of hands).

The whole seed sound is to input the vibrating rhythm of both the hands, which would send spiritual signals to the 'Koshikas'- cellular system of the body, allowing the mind to be in tune with 'Aghora-Mantra'.

अङ्गन्यासः

अघोरेभ्यो हृदयाय नमः।
ऽथघोररेभ्यो शिरसे स्वाहा
घोरघोरतरेभ्यश्च शिखायै वषट्
सर्वतः कवचाय हुं (हुम्)
शर्वसर्वेभ्यो नेत्रत्रयाय वौषट्
नमस्ते रुद्ररूपेभ्येः अस्त्राय फट्

अङ्गन्यासः

'अघोर' का न्यास हृदय के लिए, 'ऽथघोर' का न्यास सिर के लिए, 'घोर-घोर-तर' का न्यास शिखा के लिए, चारों ओर सर्वत्र कवच 'हुँ' ध्वनि से, 'शर्व-सर्व' नेत्रों के लिए वौषट् ध्वनि से, 'नमस्ते रुदरूपेभ्योः' का चुटकी लगाते हुए अस्त्र के लिए फट् ध्वनि से आमंत्रित और निवेदित है।

(Placement of Mantrik energy in one's own body)

Touch the heart region with both hands, reciting 'Aghorebhyo - 'Hridyaya Namah'. Touch the head with both hands, reciting 'Thaghorebhyo Shirase Svaha'. Touch the tuft area with both hands, reciting 'Ghora-ghora-tarebhayshcha Shikheya Vashat'. Touch your left shoulder with right hand and right shoulder with left hand reciting, 'Sarvatah Kavachaya Hum.'

Touch your right eye with right hand, left eye with left hand, reciting 'Sharva Sarvebhyo' Netraya 'Voushat'.

The 'Phat-Astra' Missile is to be recited as 'Namaste Rudra Roopebhyah', by snnaping the fingers.

अथ ध्यानम्

वामे खेटकपाशशारङ्गविलसत् दण्डं च वीणांटिके।
बिभ्राणं ध्वज मुद्ग रौ स्वनिभदे व्यङ्कं कुठारं करे॥
दक्षस्याङ्कुशकन्दलेषु डमरून् वज्रं त्रिशूलाभयान।
रुद्रस्थं शरवक्त्रं इन्दुधवलं स्वच्छन्दनाथं स्तुमः॥

ध्यान श्लोक

जिनके वाम-उल्टे हाथ में खेटक-आखेट खेलने के लिए पाश-फंदा/फाँसी, शारङ्ग/सींगी, दण्ड, वीणा, छैनी, ध्वजा मुद्गर, कुठार, व्यङ्क आयुध (अस्त्र-शस्त्र) है। दाहिने हाथ में अंकुश,

कपाल, डमरू, वज्र, त्रिशूल तथा अर्द्ध चन्द्र वक्त्र-मुख पर आधा चन्द्रमा धारण किये हुए, चन्द्रमा के समान श्वेत वर्ण वाले स्वच्छन्दनाथ को हमारा नमन हो।

'Svachhandanath Bhairava', who is adorned with club, noose, 'Sharanga' instrument, bee like a staff and a 'Vina' in his left arms. He roams like a mendicant. A shinning flag, hammer, thunder, axe, crooked missiles are adorned in his hands. In his right arm, he keeps goad, skull, 'Damru', thunder bolt and trident. He is seated in the form of 'Rudra', whose face is that of a semi-circular bow. His hue is white as the moon is. I bow to that Shiva, the Bhairava incarnation of Divinity, who is the giver of all safety with a gift of all fearlessness, to the devotees.

प्राणायामः कुर्यात्

अथ गायत्री - तत्पश्चात् भैरव-मंत्र से अथवा गायत्री मंत्र से प्राणायाम

ॐ बहुरुपाय विद्महे कोटरक्षाय धीमहि
तन्नोऽघोरः प्रचोदयात् (प्रचोदयों - त्रिवारं पठेत)

स्वच्छन्द भैरवनाथ मंत्र की गायत्री

उस बहुरूप के लिए जानने की इच्छा, कोटरक्ष के लिए बुद्धि, अघोर देवता चारों ओर उदीप्यामान हो जाएं!

प्राणायाम का तात्पर्य देवताओं के गुणों को धारणा एवं श्वास-उच्छवास द्वारा मनन करते हुए सांस का रोकना है।

I meidtate upon the Bahuroopa, for the protection of my intellect, and for saving me from all crookedness. May the aura of 'Aghora' dawn upon us for our evolvement!

(Recite the Gayatri 3 times)

मूल मंत्र

ॐ अघोरेभ्योऽथ घोरभ्यो घोरघोरतरेभ्यश्च सर्वतः शर्व सर्वेभ्यो नमस्ते रुद्ररूपेभ्यः। (१०८ वारं पठेत्)

ॐ अघोर, तत्पश्चात् घोर एवं घोर घोर तर, चारों और 'शर्वशृणति सर्व संहरतीति', प्रलयकाल मेंशृण-अनुग्रह करने वाला तथा सभी कुछ संहार करने वाला, सभी रुद्ररूपों को नमस्कार हो!

My obeisance be to the Aghora – very calm and serene Shiva who verily, is the more fearful, and even most dreadful. Aghora even transcends all the qualities. He is 'Sharva'-all essence and quintessential of all manifestation. He is execellence of all the Devatas, who is in the being of multi faceted Rudra, literally eleven Rudras. The Aghora Gayatri is to be read 108 times, if not possible then ten times, or one time, for each Anushthana/invocation.

(श्रीस्वच्छन्दभैरव रूपानुस्मरणम्)

(Recollecting the 'Roopa'/form of Shri Svachhanda-Bhairava)

ध्यानम् (Dhyanam)

(Mental representation of the attributes of Bahuroopa)

त्रिपञ्चनयनं देवं जटामुकुटमण्डितम्।
चन्द्रकोटिप्रतीकाशं चंद्रार्धकृतशेखरम्॥1॥

तीन-तीन नेत्र वाले पञ्चमुखी देव को, जटा रूपी मुकुट से शोभायान, कोटि-करोड़ चन्द्रमाओं की आभा से युक्त, तथा अपने शिखर चोटी पर अर्धचन्द्र को शोभायमान बनाने वाले...

'Bahuroopa Deva' is with three-fold five i.e. fifteen eyes, adorned with the long locks, which looks like the crown on his head. His aura

is that of tens of millions of the moons put together, and has the moon's crescent on his head, looking like a diadem.(1)

पञ्चवक्त्रं विशालाक्षं सर्पगोनसमण्डितम्।
वृश्चिकैर् अग्निवर्णाभहारेण तु विराजितम्॥2॥

ऐसे पञ्चवक्त्र को, विशालनेत्र वाले, सांप और गोनस गले में धारण किये हुए, बिच्छुओं से ढ़के हुए, जिनका वर्ण (रङ्ग) अग्नि के तेजस के समान रक्तवर्ण लाल आभा से युक्त हार जैसे विराजमान.....,

'Bahuroopa' is with five faces, having large eyes, adorned with the snakes and vipers. His necklace of scorpions is of the red hue, and thus the Lord is magistically seated.(2)

पाशांकुशधरं देवं वरदाभय शरहस्तं पिनाकिनम्।
कपालमालाभरणं खड्गखेटकधारिणम्॥३॥

कपाल मालाओं से सुशोभित, खड्ग–तलवार, खेटक–शिकार खेलने का आयुध, हाथ में अभय मुद्रा पाश, अंकुश सरकण्डे का बाण तथा पिनाक धारण किये हुए.....,

He is adorned with the garland of skulls, and keeps a sword a 'Khetaka'/moving weapon, a club weapon. He holds a noose, goad, arrow, 'Trishula'–trident in his hands.(3)

वरदाभयहस्तं च खड्गखट्वाङ्गधारिणम्।
वीणाडमरूहस्तं च घण्टाहस्तं त्रिशूलिनम्॥4॥

वर तथा अभय मुद्राओं सहित, तलवार एवं खाट का पाया हाथों में धारण किए हुए वीणा, डमरू, घण्टा तथा त्रिशूल धारी...,

He holds Vina, Damru in his heads. He also adorns 'bell and a trident' in his hands, 'Varda' and 'Abhaya' Mudras, sword and cott-leg in other hands.(4)

वज्रदण्डकृताटोपं परश्वायुधहस्तकम्।
मुद्गरेण विचित्रेण वर्तुलेन विराजितम्।।5।।

दण्ड, फरसा विचित्र मुद्गर, मुड़े हुए अस्त्र (वर्तुल) से विराजमान स्वच्छन्द भैरव को नमन हो। उसके हाथ में व्रज रूपी आयुध, वर्षायुक्त मेघों से आच्छादित है।

In his hands, he holds an axe, a 'Vajra', which is thunder-bolt, filled with swelling rain. He posseses hammer, which is wonderful in appearance, a bending twisted mould.(5)

सिहं चर्मपरिधानं गजचर्मोत्तरीयकम्।
अष्टादशभुजं देवं नीलकण्ठं सुतेजसम्।।6।।

उनका परिधान सिंह के चर्म का है, तथा उत्तरीय अङ्ग-रखा हाथी चर्म का है। अठारह भुजाओं से युक्त देवों के देव नीलकण्ठ तेजस् से परिपूर्ण हैं।

He adorns himself with the skin of lion, and his upper garment is of the elephant-skin. Thus he appears with eighteen arms, and his throat gives excellent radiance of being the blue-necked Shiva.(6)

उर्ध्ववक्त्रं महेशानि! स्फाटिकाभं विचिन्तयेत्।
आपीतं पूर्ववक्त्रं तु नीलोत्पलदलप्रभम्।।7।।

हे माहेश्वरी पार्वती! उस देवता के स्वरूप का चिन्तन करो, जिनका मुखकमल ऊपर की ओर ध्यानस्थ होता है, जो सर्वत्र स्फटिक जैसा श्वेत आभा का है। पूर्व की ओर मुख करके स्वच्छन्द भैरव नीलोत्पल-नीलकमल के दल के समान है। यही उस देवता की छवि है।

O Mahashvari-Parvati! You should think of him, or meditate upon him, whose face is looking always upwards; that looks like crystal

hue. His face on the eastern direction looks yellowish, and verily, is of the grand hue of 'Nilotpala', a blue lotus petal.(7)

दक्षिणं तु विजानीयाद् वामं चैव विचिन्तयेत्।
दाडिमीकुसुमप्रख्यं कुंकुमोदकसंन्निभम्॥8॥

ज्ञान-विज्ञान की प्रत्याशा करके उनकी दक्षिण भाग की ओर से ध्यान करना चाहिए। वाम भाग को और दाडिमी कुसुम-अनार के रक्तवर्ण (लाल रङ्ग) के फूलों वाले, कुंकुम तथा जल से युक्त आभा का ध्यान करना चाहिए।

He should be meditated upon for higher knowledge of 'Svachhanda Bahuroopa' in the eastern direction, and contemplated upon in the left direction. He should be understood with the likeness of the pomegranate flower. His hue is like that of the 'Kumkum'/saffron diluted in water.(8)

चन्द्रार्बुदं प्रतीकाशं पश्चिमं तु विचिन्तयेत्।
स्वच्छंदभैरवं देवं सर्वकामफलप्रदम्॥9॥

स्वच्छन्दभैरव की आभा अर्बुद-हजारों लाखों चन्द्रमाओं के समूहों जैसी है। उस देवता का पश्चिम भाग चन्द्रमा की शीतल किरणों का ही स्वरूप है। सभी कामनाओं की पूर्णता उनके इस ध्यान में है।

Svachhanda Bhairava, should be thought of having the radiance of million and billions of the moons on the left direction. He is the Deva, who grants all kinds of boons as desired for.(9)

ध्यायेतयस्तु युक्तात्मा क्षिप्रं सिद्धयृति मानवः।
या सा पूर्वं मयाऽऽख्याता अघोरा शक्तिरुत्तमा॥10॥

जो कोई भी उपासक ध्यानस्थ होकर उनके भैरव स्वरूप पर मन केन्द्रित करता है। ऐसा उपासक शीघ्र ही सिद्धि प्राप्त करता है। हे देवी! जैसा कि मैंने पहले कहा है, कि अघोर भैरव

की शक्ति उत्तम है।

He who meditates upon the Bhairava with the attentive thought and focussed mind, gets perfection quickly. The energy in the 'Bhairava' is infinite in nature, as has been stated by me earlier.(10)

भैरवं पूजयित्वा तु तस्योत्सङ्गे तु तां स्मरेत्।
यादृशं भैरवं रूपं भैरव्यास्तादृगेव हि॥11॥

जिस प्रकार का रूप भैरव का हो, उसी प्रकार के रूप की उपासना भैरवी की भी करनी चाहिए। उसी के नाम रूप गुण आदि की पूजा करके उसी में तल्लीन रहना चाहिए।
नोट : तादृगमेव अथवा तादृशमेव पाठ भेद के अनुसार है।

As is the form of Bhairava, and visible to the aspirant, so is he to be adored. An indentification of the self should be maintained with the Bhairava, at the time of 'Puja' - The ritualistic adoration, endowed with such qualities, is appreciated.(11)

ईशत् करालवदनां गम्भीरविपुलस्वनाम।
प्रसन्नास्यां सदा ध्यायेद् भैरवीं विस्मितेक्षणां॥12॥

भैरवी के सुकोमल अङ्गों का ध्यान करके उनके प्रसन्नचित मुख पर ध्यान करना अभीष्ट है। उनका मुख विकराल भी है और विपुल, विस्मित भी – जिसमें सौंदर्य भी असीम है। भैरवी–सृष्टि, संरक्षण तथा संहार करने वाली देवी है।

The Bhairavi should be adored and meditated upon visualizing her benign face, with wonderful eyes. She is also with terrific but lofty looks, looking very serene, deep and profund, as the name 'Bhairavi' stands for creation, sustenance and dissolution.(12)

नौम्यहं तां परंब्रह्म महिषीं चित्स्वरूपिणीम्।
चराचर स्वरूपेण स्थितां भक्तवत्सलाम्॥13॥

मैं उस महिषी–सम्राज्ञी चिद्स्वरूपिणी परम ब्रह्म की शक्ति

को नमन करता हूं, जो अपने भक्तवात्सल्य रूप से समस्त चराचर को अपने ही भीतर समायी हुई है। चर और अचर जगत् उसी चैतन्यमयी का वास्तविक स्वरूप है, वह महामहिषी देवी है।

I bow to that Supreme Mother, the embodiment of Absolute Existence, Consciousness. She is abiding in animate and inanimate beings of Prakriti–primordial nature. She is all loving to her devotees. 'Chid-Svaroopa'–awareness of the Atman is her statis and dynamis benign nature for the devotees.(13)

ब्रह्मादि कारणातीतं परानन्दमयीं शिवाम्।
ततः परमबीजेन स्थितं परमकारणम्।।14।।

त्रिकारण–ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वर आदि कारणों से अतीत् अर्थात् सभी अवस्थाओं को लांघ कर, परा रूपी आनन्द को प्रदान करने वाली देवी शिवा को नमन हो। वही शक्ति परा बीज – "ऐं क्लीं सौः" मंत्र में निवास करने वाली, कारणातीत होकर पराभट्टारिका ऐश्वर्य से युक्त है। वही आद्याशक्ति स्वरूपा है।

Bhairavi, who is adored as Shiva–the consort of 'Svachhanda Bhairava Shiva', is the Causeless, transending Brahma and other Devatas. Her nature is of Absolute bliss, who is existent in the 'Paramabija' - eternal seed. Devi Shiva is the eternal cause of all that is existent and is beyond also. Being 'Para', the Devi transcends.(14)

सुशान्तं निष्कलशुद्धतेज सर्वश्रीयम्।
भजे विश्वेकविश्वरूपात्मा विश्वसर्गादिकारणम्।
परप्रकाशं उपशमनं उमा स्वच्छन्छभैरवम्।।15।।

सुचारू रूप से शान्त, बिना किसी कला से युक्त, अर्थात् असीम, शुद्ध तथा तेजस्वी, श्रीयुक्त को मैं नमन करता हूं। विश्व

का एक मात्र स्वरूप है जिसका; वही विश्व सर्ग आदि का कारण है। सर्ग-सृष्टि रचना, प्रकृति तथा नैसर्गिक गुण के अर्थ में स्वच्छन्द का ही स्वरूप है, पर अनाश्रित प्रकाश का पुञ्ज उपशमन करने वाले उमा सहित स्वच्छन्द भैरव को नमन हो।

Bow and make obeisanace to the most serene, calm and exalted 'Uma' and 'Svachhanda Bhairava'. Both are beyond form, pure in existence, radiant and vibrant, filled with all anspiciousness. They alone are one in existence, of the form of Universal self, and the cause of all serial times. Their lustre is all illuminating, quiet and dignified. Their brilliance is beyond the perception of understanding, only that transcendental light can be realized, not otherwise.(15)

भैरव्यै नमः

सर्वकारणकलापकल्पितोल्लास संकुलसमाधिविष्टराम्।
हार्दकोकनन्दसंस्थितामपि तां प्रणौमि शिववल्लभामजाम्॥16॥

समस्त कारणों का समूह, जिसका उल्लास केवल कल्पना है तथा जो शक्ति ब्रह्मा की समाधि को विष्टर कुशा से आसीन कराने पर सुदृढ़ करती है। रक्त वर्ण के कमल पर स्वयं आसीन होकर, शिव के हृदय में वास करने वाला शिव की अर्द्धाङ्गिनी अजा-भैरवी को प्रणाम! विष्टर ब्रह्मा का सांकेति स्वरूप भी है।

Sitting in 'Samadhi', where there is all light and splendour, having the seat of Brahma established on the 'Vishtara-Kusha' grass, avoiding all the confusions and contradictions. I am prostrating before the Divine Mother, who is very dear to Lord Shiva, and is seated on the red lotuses as well. The Divine Mother being very consort of Shiva is the cause of all that exists, and that can be conceived as the brilliance and happiness.(16)

सर्वजन्तु हृदयाब्जमण्डलोद्भूत भावमधुपानलम्पटाम्।
वर्णभेदे विभवान्तरस्थितां तां प्रणौमि शिववल्लभामजाम॥17॥

सभी प्राणियों के हृदय में वास करने वाली, समस्त मण्डलों में उद्भासित हुई- अर्थात् सभी मण्डलों की रहस्यमयी शक्ति, मधुपान/मधुपर्क को भावनायुक्त चखने वाली भैरवी शिवा है। वही देवी वर्णभेद में 'विभव'-शक्ति पराक्रम एवं 'विभाव'-मन एवं शरीर की किसी विशेष स्थिति में विकसित करने की दशा में स्थित रहती है। वास्तव में वर्णभेद के कारण ही भैरवी को मातृका वर्णमाला के रूप में भी प्रणाम करता हूं।

Abiding in the hearts of all the living beings, appeared from the various Mandalas, emotionally attached to the taste of 'Madhu'– the elixir of life. In the 'Vibhava' state, which is of acquitance and clear perecption of the differentials, She controls the whole universe. I make my prostrations to the consort of Shiva.(17)

मूल स्तोत्रम्/स्तोत्रपाठः

ॐ नमः परमाकाशशायिने परमात्मने।
शिवाय परसंशान्त-निरानन्द पदायते॥

ॐ मेरा नमन उस परमात्मा को हो, जो परम शान्त, अक्षुब्ध तथा समस्त आकाश में व्याप्त, निरानन्द/अथवा गतिशील पद रूप में अभिव्यक्त है। वस्तुतः जो शिव स्वरूप है, सदैव जो (जगत् की रक्षा के हेतु) अपने पादों/पैरों पर खड़े रहते हैं। पृथ्वी तत्त्व से आकश तत्त्व में व्याप्त वह शिव वंदनीय है।

OM, my prostration to Shiva, who is the Lord of all beings, who has streched his own being, upper in the up-skies. Hie is very calm and is predominantly serene. He is like a foot-soldier, where there is no rest.(1)

अ-अव्याच्यायाप्रमेयाय प्रमात्रे विश्वहेतवे।
महासामान्यरूपाय सत्तामात्रैकपिणे।।2।।

शिव 'अवाच्य' - नादरूप प्रणव, जिसकी व्याख्या हो ही नहीं सकती, जो 'अप्रेमय' - जिसका 'रूप-वर्ण' हो ही नहीं सकता, परन्तु विश्व के हेतु से निमित्त कारण बनते हुए, महा सामान्य रूप धारण करन के लिए सत्य स्वरूप वाले शिव को अर्थात् 'अ' आदि वर्ण में स्थित रूप को....

He is neither distinctly expressed nor expressible in words by Prameya – as being the object of knowledge and reflections for having the absolute knowledge of the Divine for the understanding of cause and effect of the universe, in the most generic form, is easily adored.(2)

घ - घोषादि दशधा शब्दबीजभूताय शम्भवे।
नमः शान्तोग्रघोरादि मंत्रसन्दर्भगर्भिने।।3।।

'घोष' आदि दशविध दस विधाओं से शब्द-नाद ब्रह्म का मूलकारण अर्थात् बीज रूप में स्थित, अनाहत ध्वनि से आविर्भूत शिव को नमस्कार हो! शिव शान्त भी है और उग्र भी, तथा मंत्र ही जिनका शरीर है। मंत्रमय होने के कारण दृश्यमान जगत् में अभेद रूप से स्थित है, ऐसे 'घो - घ + उ' वर्णों से सुशोभित उस सदाशिव को नमस्कार हो! यही उसकी शाम्भवी मुद्रा है।

'घ' का अर्थ प्रहार करने वाला एवं घण्टा/चन्द्रघण्टा शक्ति को धारण करने वाले, 'उ' स्वयं से संधि युक्त अर्थात् जगत् की स्थिति पर 'घोषादि' ध्वनि से नियंत्रित करते हैं, ऐसे शिव को प्रणाम हो! यही शिव की शब्द शरीर रचना है। शिव ही शब्द है।

He is to be adored in the calm and serene cosmic form, also seen in the terrible form and present in the 'seed-sound' Mantras which

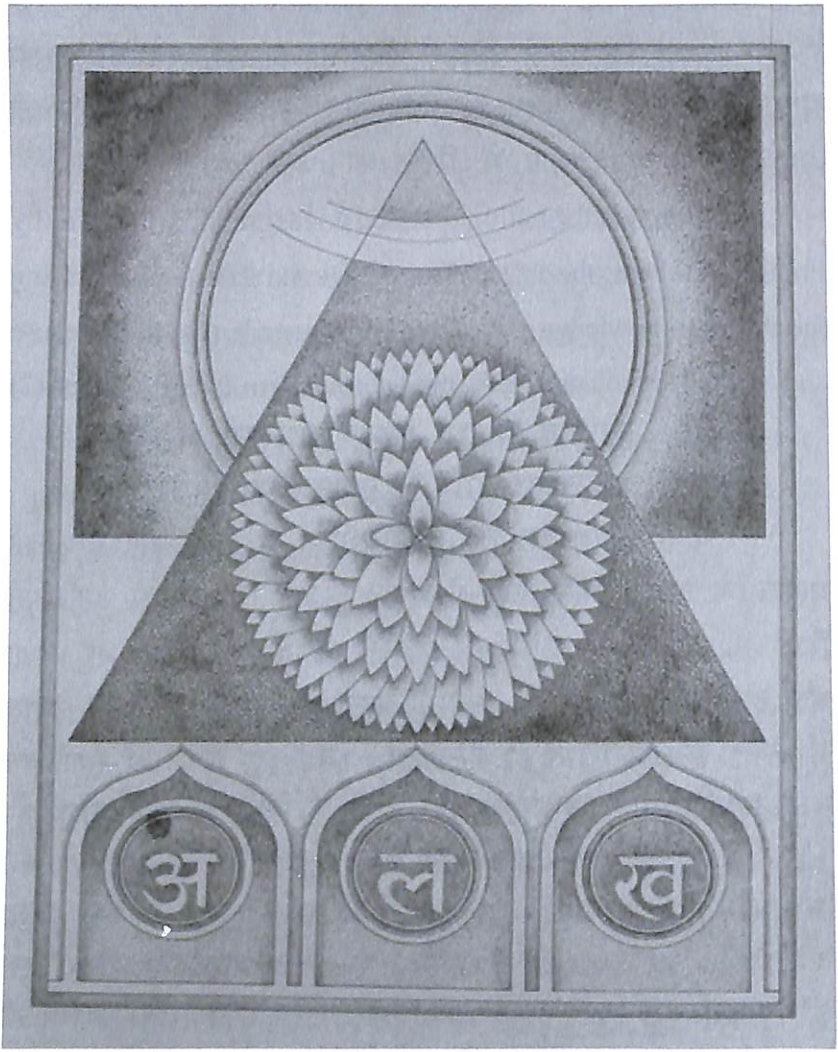
अ
ल
ख

spread in all the ten directions. He is adored as 'Ghosha' – the divine proclamation. He is the primal cause of being the Eternal seed of all the animate beings in his 'Shambhavi', state of mind. He is for granting spiritual happiness.(3)

रे- रेवती-सङ्गविस्रम्भ समाश्लेष विलासिने।
नमः समरसास्वादा परानन्दोपभोगिने।।4।।

'रेवती' शक्ति के विभ्रम रूप से, तथा प्रगाढ़ रूप से अपनी ही शक्ति का आलिङ्गन करते हुए अपने ही विलास से तन्मय होते हुए सम रस का आस्वादन करते हुए, शिव शक्ति एक रूप होने वाले आनन्द स्वरूप को नमस्कार हो! 'रे'-र+इ वर्ण-सम्भूत बीजाक्षर में 'र एवं य' वर्ण विद्यमान होने से 'रे' सम्बोधनात्मक अव्यय स्वरूप है। यही निर्विकार स्वरूप है।

Extended in line with the 'Revati' star, embracing the cosmic lofty rythms, enjoying and celebrating the pure bliss in his graceful aesthetic form. He is being adored and prostrated in the harmony of spiritual flovour.(4)

भो- भोगपाणे नमस्तुभ्यं योगीशैः पूजितात्मने।
द्वय निर्दलनोद्योग-समुल्लसितमूर्त्तये।।5।।

भैरव शक्ति रूप से भोग पाणि कहलाने वाले शिव को नमस्कार हो, जो योगीश्वरों से सदा हृदय कमल में धारण करने वाले आराध्य देव है। शक्ति एवं शक्तिमान (शिव-शक्ति) के भेद को निरस्त करने वाले हैं। अपने ही उद्योग अथवा चेष्टा से निरन्तर उल्लास में रहते है। यही शिव का स्वच्छन्द स्वरूप है।

'भ' - भ्रान्ति में भी आभास देने वाले, ऐसे बीज मंत्र से बहु चर्चित एवं पूजित 'भयः' 'ध्वनि से 'एक' में ही 'बहु' को सुशोभित करते है।

Be prostrations to you, adored by the very self of the Master Yogis! You are holding with the enjoying hands the manifestation, that you have created. Your efforts are to remove the dualism of the embodied souls with your exalted self, as you are verily, the existent form, who is very much supremely exalted.(5)

थ- थरत् प्रसरविक्षोभविसृष्टाखिलजन्तवे।
नमो मायास्वरूपाय स्थाणवे परमेष्ठिने।।6।।

संसार निर्माण की 'सृ से सृष्टि' का स्पन्दन करने वाले शिव को नमन हो, जिस ने अखिल जीव सृष्टि-चल एवं अचल जगत में एक प्रकार से विक्षोभ-द्वन्द्व का, जिस से आभास हुआ; उस स्थिति में भी मायास्वरूप, स्थाणु होकर/स्थित भाव से परमेष्ठिन-ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वर का 'एक में ही बहुरूप' को धारण किया। ऐसे शिव को नमस्कार हो।

'थ' वर्ण संरक्षण एवं मांगलिक अर्थ का बीज वर्ण है। 'थ' की स्फुरण शक्ति पृथ्वी तत्त्व से शिव तत्त्व तक आरोहण की प्रक्रिया है, जिसमें बहुरूप गर्भ का समावेश है। माया तत्त्व के कारण इसमें विक्षोभ का आभास है, परन्तु 'प्रकाश से विक्षोभ का अन्त होना अनिवार्य है।

The shaking trembles and disturbances caused by diffusion, making the universe move and creating the animate worlds, being the world of Gunas, through his Maya–sporting nature. He himself remains unmoved, always being in his supreme nature of being 'Parmeshthin'– the supreme Lord standing at the highest. The three Gunas are the cause of all existence viz; 'Sattva-tamas-rajas'.(6)

घो- घोरसंसार सम्भोगदायिने स्थितिकारिणे।
कलादिक्षितिपर्यन्त पालिने विभवे नमः।।7।।

संसार के घोर सम्भाग से लिप्त होकर 'जीव' को जगत् का आभास कराने वाले 'शिव' को नमस्कार हो! स्थिति नामक परमैश्वर्य से प्रकाशमान होकर संसार के बर्हिरूप में व्यक्त होते हुए, कला आदि तत्त्वों से युक्त होते हुए भी क्षिति-प्रलय होने के समय तक उस पालनहार के लिए नमन हो! वही शिव विभु है, जो वैभव से युक्त है।

'घो' – 'घ + उ' का सान्निध्य होकर शिव 'सघोष वर्ण' है। एवं घोर रूप - संसृति रूपी महान कष्ट की प्रयोगशाला भी है। इस में कला आदि तत्त्वों के समावेश से जीवन जीने की क्षमता भी है। ऐसी महान् दया शिव की है। बीज रूप होने से रौद्र रूप भी है।

Prostration to Aghora Bhairava, who sustains the universe in his Existent state. He grants all the objects of enjoyment to the embodied souls. He takes all care in his 'Vibhava' nature, which is cause of manifestation, till the last moment of existence remains in any digital form. (Kala is in the 3 digits of 'Sat-Chit-Ananda'.(7)

र-रेहनाय महामोहध्वान्त विध्वंसहेतवे।
हृदयाम्भोजसङ्कोचभेदिने शिवभानवे।।8।।

अंधकार से मोहित होकर त्रस्त हुए, अज्ञान एवं अविद्या को विध्वंस करके जीवात्मा को प्रकाश की ओर लेने वाले भैरव को नमस्कार हो! संकोच-न्यूनीकरण अथवा सिकुडाते हुए जीवात्मा को उसी प्रकार प्रफ्फुलित करती है, जिस प्रकार जीव का हृदय शैवी-प्रकाश से विकसित होता है। अतः शिवरूपी दिवाकर को नमन हो!

रेह - प्रकाश का बीज रूप है, र वर्ण अग्नि का स्वरूप है र से 'इ' मात्रा, शिव की इच्छा शक्ति का प्रतीक है। शिव

का एक नेत्र सूर्य है। 'ह' वर्ण से शिव में सद्योजात ऊष्मा-प्रचण्डता प्रखर होती है। रेह शब्द अग्नि शिखा के लिए भी कश्मीरी भाषा में प्रयुक्त होता है।

He dispells off all the ignorance, delusion for his devotees when he roars, he takes away all the doubts; literally cuts off all the boundaries of limitations. My prostration to Shiva, who is apparant visible shining Sun, whose heart is like the lotus, which flowers with the solar rays.(8)

भो- भोगमोक्षफलप्राप्ति हेतुयोगविधायिने।
नमः परमनिर्वाणदायिने चन्द्रमौलिने।।9।।

भोग - सांसारिक भोग, परमार्थ के लिए मोक्ष, इन दोनों अभिप्रायों से युक्त फल की प्राप्ति के लिए एक संयोजक के रूप में विधान के रूप में विधाता है। परम-निर्वाण अर्थात् शिव-सायुज्य के दाता है। विश्व को सिक्त-सिंचन करने वाली 'अमा से उत्पन्न' अमृतकला रूपी चन्द्रमा को अपने सिर पर धारण करने वाले चन्द्रमौलि शिव के लिए नमस्कार हो!

'भोग-भ + उ + ग' से भ-भ्रम, तथा उ- शिव एवं विष्णु स्वरूप, ग- गतिमान होने के कारण यह बीजाक्षर संसार में भ्रम का द्योतक है। इस भ्रम को दूर करने के लिए 'मोक्ष' की प्राप्ति के लिए गति प्रदान करने वाली शैवी अवस्था परम निर्वाण का आश्रय है। यही वास्तविक योग है, जिसे सायुज्य भाव से अनुभव किया जाता है।'

My prostrations to 'Chandramauli' , who is adorned with the crescent, who is the giver of ultimate 'Nirvana', which is Absolute merger existent in his own being. He has paved the way of 'Bhoga'–enjoyment and 'Moksha'–liberation through the practices of Yoga.(9)

घो- घोषाय सर्वमंत्राणां सर्ववाङ्मयमूर्त्तये।
नमः शर्वाय सर्वाय सर्वपाशोपहारिणे।।10।।

हे शिव! सभी मंत्रों के घोष रूप से युक्त प्रकाश हो। सम्पूर्ण वाङ्मय ही तेरी मूर्त्ति है। समस्त मंत्रों द्वारा सम्बोधित हो। मंत्र के त्राण-अभिरक्षा हेतु मंत्रमहेश्वर हो। वैदिक, तथा आगम शास्त्रों में अभिहित मूर्तिमान शिव ही तुम हो। तुम्हारे शर्व रूप, अपने शर-तीरों से असुरों का संहार करने वाले तुम ही शिव हो। संसार के बंधन में डालने वाले पाश के संहारक शिव को नमस्कार हो!

घो- घोर बंधन को अपने 'श/ष' शरों से विध्वंस करने वाले, तथा भयानक ध्वनि की घोषणा करने वाले, बीजरूप शिव मंत्र महेश्वर ही तुम हो।

'Shiva' you are the embodiment of all the scriputres – both Vedic and Agamic, and the articulation of all the Mantras. Prostration be to you, who is revered as All 'Sharva', killing the Asuras with arrows, and makes us free from all the gripped nooses, for removing and wipping off our sins.(10)

र-रवणाय रवान्ताय नमस्ते रावराविणे।
नित्याय सुप्रबुद्धाय सर्वान्तरतमाय ते।।11।।

हे शिव! तुम तीक्ष्ण क्रन्दन करने वाले हो, तथा उससे व्याप्त भयानक ध्वनि का संहार करने वाले भी हो। तुम्हारे लिए नमन हो! दहाड़ने वाले ध्वनि से उत्पन्न हुए भय का नाश करने वाले भी हो। तुम नित्य सप्रबुद्ध हो, तथा अन्तःकरण में उत्पन्न हुए तमस् के नाशक हो। अतः अर्न्तयामी हो।

Prostrations to Aghoranatha, who subdues all kinds of crying and weeping, but he makes the universal sound all vibrant, in eternity. He is all intelligence, and is beyond any kind of darkness – physical, mental or of vital pranas/air.(11)

घो- घोषाय परनादान्तश्चयाय खेचरायते।
नमो वाग्पतये तुभ्यं भवाय भव भेदिने॥12॥

रवन - क्रंदन करने वाले, क्रंदन का अन्त करने वाले, अनाहत-नित्य शब्द के सृष्टा, चीखने और भैरव को हठात् दहाड़ने पर प्रेरित करने वाले को नमन हो! वही तत्त्व सुप्रबुद्ध एवं अन्तर्यामी में भी होने का कारण है, उस स्वच्छन्द भैरव का भी नमन हो!

रवन - कश्मीरी शब्द 'रिवुन' है। जो किसी भी अनहोनी अथवा अशोभनीय अवस्था का भाव प्रकट करता है। शिव-अपनी शुभ दृष्टि के कारण अशुभ से शुभ की ओर हठात् अथवा सुप्रबुद्ध करुणा से प्रेरित करता है। र-व-न (अग्नि तत्त्व, वायु तत्त्व, समतत्त्व) के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है। इस बीजाक्षर में रोने तथा रूलाने वाले में भी ईश्वर तत्त्व का समावेश है। यही सकल-विमर्श-उल्लास बीज है।

घोषणा करने के योग्य, परा से सम्बंधित नाद के स्वामी! आकाश तत्त्व में विचरण करने वाले का नमन हो! जो वाणी के स्वामी वाचस्पति है- उनको नमन हो! संसार रूपी 'भव' से मुक्ति दिलाने वाले बहुरूप के लिए नमस्कार हो!

'घोष' - उज्ज्वल रूप में शब्द करने का बीज है। घ- प्रहार करने वाला, ओ- करुणा बोधक बीज हैं। शिव की प्रताड़ना में भी जीव का हित निहित है।

His roaring sound, which is transcendent in nature, vibrates in the cosmic realms. Prostration be to him, who is the supreme architect of all Mantrik vibrations and sounds. He is 'Bhava' – the creator for removing the differences in 'Jiva' and 'Shiva'.(12)

र- रमणाय रतीशाङ्गदाहिने चित्रकर्मणे।
नमः शैलसुताभर्ते विश्वकर्त्रे महात्मने॥13॥

समस्त चराचर जगत् में रमण करने वाले, रति के स्वामी

कामदेव के अङ्गों का दहन करने वाले, अनेक प्रकार के चित्रणों के कर्त्ता, दिव्य चित्रकार अर्थात् विचित्रता से युक्त-शैलसुता पार्वती के स्वामी विश्व के कर्त्ता एवं सर्वश्रेष्ठ महान् आत्मस्वरूप के विग्रह (स्वच्छन्द भैरव) के लिए नमस्कार हो!

'र बीज व तथा ण' से युक्त - प्रसन्नता का शब्द शरीर है। 'र' वर्ण अग्नि तत्त्व - तेजस रूप है, म - ममत्व, प्रसन्नता एवं कल्याण स्वरूप, ण-प्र, परि उपसर्ग होने के कारण सृष्टि-स्थिति - संहार-निग्रह-अनुग्रह से युक्त स्वभाव वाले शिव स्वच्छन्दनाथ है, जो स्वयंभू आनन्दप्रद उल्लास की कृपा करता है।

Prostration be to the consort of 'Shaila-Suta'/daughter of Himavan, who is the Creator of the universe and also the great and glorious Lord, as being Shiva. He is bright and beautiful, thus destroying the indulging 'Kamadeva', through the fire of his third eye. He is the Divine architect, be obeisance to that Aghora!(13)

त- तमः पारप्रतिष्ठाय सर्वान्तपदगाय ते।
नमः समस्त तत्त्वाध्वव्यापिने चिद्स्वरूपिणे॥14॥

अपने को प्रकाश में अवस्थित भाव में देख कर, समस्त उपाधियों को लांघ कर सभी तत्त्व-अर्थात् 36 तत्त्व, पद, मन्त्र, भुवन, कला आदि अध्व-नक्षत्रीय मार्ग में प्राप्त तथा चित्तस्वरूप-चैतन्यमयी संवित् शक्ति के लिए नमस्कार हो!

'नमः'-अपने आप में बीजमंत्र है। चैतन्यमयी शक्ति का सदैव नमन हो! 'न' वर्ण-मूलाधार गणेशजी का वर्ण है। 'म'-नियन्त्रण है। अपने आप को स्थिर भाव में रखने के लिए सदैव नतमस्तक होना इस बीजमंत्र का तात्पर्य है। (पाठ भेद से श्लोक का आरम्भ **नमः पार प्रतिष्ठाय** से आरम्भ होता है।

Prostration to Aghora, who has transcended all fixations and

settlements, and the movements thus transcend's all the darkness of the animate beings. He is of the innate nature of 'Chit Svaropa', the conscient being and extended in universe with all the 'Tattvas which is Thatness' of Shiva.(14)

रे-रेवद्वराय रूद्राय नमस्तेऽरूपरूपिणे।
परापरपरिस्पन्द मन्दिराय नमो नमः॥15॥

रेवत-रे+वत् 'र तथा य' वर्णात्मक बीजों में उत्कृष्ट, रुद्र रूप में व्यवस्थित होते हुए भी अरूप-निराकार है। 'पर' तथा 'अपर'/व्यक्त तथा अव्यक्त, गुण तथा गुणातीत में अपनी स्पन्द शक्ति से आहूत हुए, मन्दिरवासिन्-शिव के लिए नमस्कार हो! (रेवत-नीम्बू का पेड़ भी होता है। नीम्बू का पीतवर्ण ब्रह्मचर्य का प्रतीक भी है।)

'रे' - अग्नि स्वरूप, इच्छा सहित, वायु स्वरूप गतिमान - 'व' बीजमंत्र से अलङ्कृत, 'त' - वर्ण अमृत स्वरूप बीजाक्षर है।

My all prostration (eight fold) be to 7Rudra, who gives form to formless, also who is a boon to the citron lemon, which represents Sattva, Rajas and Tamas. He is immantent, transcendent, with a Universally vibrant dwelling sound termed as Primal OM, or AUM.(15)

भ - भरिताखिलविश्वाय योगिगम्याय योगिने ते नमः।
नमः सर्वेश्वरेशाय महाहंसाय शम्भवे॥16॥

ऐश्वर्य शक्ति - परमभट्टारक शक्ति से युक्त, सम्पूर्ण विश्व का भरण-पोषण करने वाले व्यक्त अवस्था में अवस्थित, योग-अष्टाङ्गयोग द्वारा ज्ञेय-अनुभव में अपने योग्य एवं महाहंस-क्षीर विवेक स्वरूप चैतन्य से उल्लसित शाम्भवी अवस्था वाले शिव को नमन हो।

'भ' - वर्ण, बीज रूप से भैरव के 'भ' - धारण करने वाले, वहन करना ही है स्वभाव जिसका; तथा जिसमें पुष्टि तत्त्व की प्रधानता है, उसी स्वच्छदनाथ भैरव के स्वरूप को नमस्कार हो।

Prostration to the Supreme Creator of all the Devatas, who is of the nature of highly occult sound 'Hamsa', possesing the nature of 'Shambhu/Shiva', who is all benign and who graces with eternal peace. It is he, who just upholds this universe, which can only be understood by the Yogis, when they are one in the very breath and tune of Yoga.(16)

च-चर्च्याय चर्चनीयाय चर्चकाय चराय ते।
रवीन्दुसंधिसंस्थाय, महाचक्रेश ते नमः॥17॥

चर्चा के योग्य - ध्यानपूर्वक अध्ययन तथा अनुशीलन एवं विचारणीय आवृति-स्वर पाठ युक्त, चेतन स्वभाव वाले, सभी प्राणियों में विचरण करने वाले स्वच्छन्दनाथ भैरव को नमन हो! सूर्य तथा चन्द्रमा की संधि में स्थित, चक्रराजचक्र स्वयंभू चक्रेश्वर/शिव शक्ति स्वरूप के महा भैरव रूपी अधिनायक तथा अधिपति शिव को नमस्कार हो!

'च'-वर्ण, चन्द्रमौलि शिव का विशेषण, बीज रूप में है। इसी बीज से उत्पन्न चक्रेश्वर, जिसकी चर्चा स्पन्द रूप से व्यवस्थित तथा अभिहित है। मातृका पूजन में इसका पूरा विवरण है।

O Maha Chakreshvara! My prostrations be to you! You are the concurrent (Sandi-Sansthan) Bindu of the Sun and Moon, abiding in the Shri Chakra, as the nucles of all the Chakras. You are yourself the 'Mantra' – the recitation of which is smearing the body with holy ashes, for being discussed by the Agamic Rishis. Thus you roam in Yogis.(17)

स- सर्वानुस्यूतरूपाय सर्वाछादकशक्तये।
सर्वभक्षाय शर्वाय नमस्ते सर्ववेदिने॥18॥

अर्न्तव्याप्त - सर्वत्र सभी अवस्थाओं में, नियमित तथा निर्बाध रूप से बंधा हुआ, ऐसे रूप वाले को नमन हो। सर्वत्र अपने संवित् से चहुँ दिशाओं को आच्छादित करने में सर्वशक्तिमान,

सभी को अपने में सहंरण (भक्षण) - विलय करने पर उद्यत, सर्वज्ञ तथा सर्वेश्वर को नमन हो! वस्तुतः भैरव प्राण रूप में स्थित है।

सर्व - बीज रूप से आदि बीज है। 'स' वर्ण शिव है। यही संयुक्त बीज है, जो व्यक्त स्वरूप में विद्यमान है। सर्व ही सम्पूर्ण तथा अशेष है। सर्व ही सदा पूर्णमदः पूर्णमिदं है।

My prostrations be to all knower Shiva, the 'Sharva'–who consumes all, but who is the all embracing power of the time Sheaths of 'Prana-apana' etc. You are of the form of inter-locket of micro and macroself. You are of the nature of volition, which is self-will.(18)

र- रम्याय वल्लभाक्रान्त देहार्धाय वियोगिने।
नमः प्रपन्नदुष्प्राप सौभाग्य फलदायिने॥19॥

अत्यन्त रमणीय, पार्वती के अर्द्ध शरीर – अर्धनारीश्वर स्वरूप, विनोद स्वभाव वाले, भक्तों को कठिनाई से योग द्वारा प्राप्त होने वाले, सौभाग्य रूपी फल देने वाले स्वच्छन्द भैरव को नमन हो! सौभाग्य से तात्पर्य मोक्ष के दाता, अथवा अपने में विलय करने वाले का है। उसी स्वच्छन्द भैरव के लिए नमस्कार हो।

'रम्य' - 'र' बीज - ज्योति, अग्नि, इच्छा शक्ति है। र से 'रम्य' में रमणीयता, जो आनन्दप्रद, प्रकृति तत्त्व से सम्बंधित है, इसी बीज का सम्बंध पृथ्वी, अग्नि तथा पारस्परिक रूचि से है। रम्य सुहावना सुखद एवं प्रकाश का प्रतीक है।

Prostrations be to the 'Aghoranatha', who gets easily pleased and is the giver of all auspiciousness, as the result of the actions, which are wonderful in spirit. Though he himself is possessed with the

separation of his half portion of body, who is 'Sati-the Divine Mother', yet he extends his all grace to the devotees.(19)

त- तन्महेशाय तत्त्वार्थवेदिने भवभेदिने।
महाभैरवनाथाय भक्तिगम्याय ते नमः।।20।।

उस महेश्वर को, जो तत्त्वार्थ के वेत्ता है, अर्थात् विद्या एवं अविद्या की वास्तविकता के ज्ञाता है, संसार रूपी 'भव' में भेद, अभेद, भेदाभेद के ज्ञाता हैं, उस स्वच्छन्दनाथ को नमस्कार हो! उस महा भैरवनाथ को केवल भक्ति विलास से ही जाना जाता है।

'त' बीज - तन्मयता है, जिससे अमृत तत्व का ज्ञान प्राप्त होता है। 'तत्'-तत् स्वरूप, तद्रूप का सारांश है। 'तत्' निर्गुण-निराकार ब्रह्मन् है, परन्तु व्यक्त रूप में महेश्वर है।

Prostrations be to that Maheshwara, who is the Lord of all 'Tattvas', Absolute thatness, which is manifest and beyond, and the knower of all existence, that is the 'Bhava' aspect of Shiva. He is the Maha Bhairavanartha, who dwells in the very being of his Bhaktas, known to be the acclaimed devotees.(20)

श- शक्तिगर्भप्रबोधाय शरण्यायाशरीरिणे।
शान्तिपुष्ट्यादि साध्यार्थ साधकाय नमोस्तुते।।21।।

शक्ति का वास्तविक बीज 'बहुरूपगर्भ' है। यही प्रकाश और विमर्श रूपिणी कुण्डलिनी शक्ति है। अव्यक्त रूप से अशरीरी अर्थात् सूक्ष्मतम अवस्था में प्रकाश को समाये हुए दिव्य शक्ति है, उस रूप को नमन हो! शान्ति, पुष्टि आदि कर्मों की सिद्धि प्राप्ति के हेतु साधकों के लिए भी नमन हो! (यही शिवाद्वैत का भाव है, जहां साधना, साधक, साध्य की तन्मयता होती है।

'श-शक्ति' बीजाक्षर उष्णता, उत्कण्ठा, उत्सुकता प्रदान करने वाला वर्ण है। श विनाशकर्ता भी है, तथा आनन्ददाता शिव है। ऊर्जा प्रदान करनेवाली शक्ति अन्ततः शान्ति प्रदान करने वाला बीज है।

Prostrations be to him, who awakens the 'Kundalini Shakti' the energetic and live womb of all eternity, which is latent in the body, and provides refuge to the Bhaktas. He grants peace, thriving life and nourishment for doing Sadhana–ansterities to the Sadhakas/spiritual practitioners.(21)

र-रवत्कुण्डलिनीगर्भ प्रबोधप्राप्तशक्तये।
उत्स्फोटनापटुप्रौढ़ परमाक्षर मूर्त्तये॥22॥

जिनके गर्भ-सारभूत हृदय कमल में रवन कुण्डलिनी शक्ति समाहित है; तथा उसी गर्भ-शिवरहस्य के अन्तः प्रबोध से शक्ति परिपूर्णता से, एवं स्फोट, सफार के कारण विश्व रचना में निष्णात् (प्रौढ़/परम) अक्षर रूप से विश्वमय है। उसी 'शिवाकार स्वच्छन्द भैरव' के मूर्त्त रूप को नमस्कार हो।

'रवत्' बीजाक्षर - हूहू शब्द, जिससे कुण्डलिनी जागरण की शक्ति उद्भासित होती है, उसी स्फार के स्फुरण से जीवात्मा के भीतर ही शिव का महत्तम स्वरूप बहुरूप गर्भ में आत्मसात हो जाता है।

For arousing the 'Kundalini', which is dormant, in a Shdhaka, He graces the forceful energy to make Kundalini to be awakened for Shiva-consciouness. It thus creates a universal throb while bursting in 'OM' sound, intelligently accurate as being the body of syllables, rendered as the Akshar-Murti Shiva, which is Absolute in nature.(22)

स-समस्त व्यस्त संग्रस्त रश्मिजालोदरात्मने।
नमस्तुभयं महामीन रूपिणे विश्वगर्भिणे॥23॥

सम्पूर्णता में व्यस्त संसार रूपी रश्मि जाल की संयुक्ति को आत्मानुभव कराने वाले 'रमयति'-रवन, वैष्णव स्वरूप को नमन हो। जल रूपी विश्व को अपने भीतर समाने वाले विष्णु महामीन रूपी परमेश्वर, तुझे प्रणाम हो! अतः विष्णु-मत्स्यावतार ही शिव स्वरूप है। यही हरि और हर का अभिन्न एक ही रूप है।

समस्त-शब्द का 'स' बीज सम्यक्, संधि एकात्म भाव की शक्ति है। समस्त ब्रह्माण्ड में व्याप्त स्थिति में चराचार का भाव विशेष अवस्था का योग है। ऐसा आचार्य अभिनव गुप्त ने भैरव स्तोत्र में कहा है।

Prostrations be to you, who is the source of all universal womb! You are of the form of fine 'Mudras' of 'Kaula tradition'. You are so much engrossed in the web of rays, which is the very self of universal hub, which is always in motion, and busy in the phenomenal destroying through dissolving, what is apparent and conceivable.(23)

रे-रेवारणिसमुद्भूत वह्नि ज्वालावभासिने।
घनीभूत विकल्पात्म विश्वबंध विलापिने॥24॥

'रेवा' शक्ति रूपी अरणि से पैदा हुयी अग्नि की लपटों में प्रकाशमान, घनीभूत - ठोस, विकल्प रूप संसार के बंधन से छुड़ाने वाले के लिए स्वतन्त्र भाव में 'सद्योजात' भैरव का नमन हो! क्योंकि यही घनीभूत होकर कई विकल्पों में समाहित होकर बंधन का कारण बन जाती है।

रेवा-बीजाक्षर में र+इ, वह्नि तथा दहन स्वभाव योगाग्नि से चित्त की वृत्तियों का निरोध करने के लिए आवश्यक है।

Born out of the 'Homa' fire, and encircled in the fire, then you have made 'Rati' – female aspect of desire, saddened after 'Kama' - the male principle of desire and passion, was burnt to ashes, as 'Kama/ lustfulness of senses binds the worldly beings. You evolve the devotees to be in Yogic form, which is inherent in all creation through various 'Vikalpas'-options.(24)

भ-भोगिनीस्यन्दनारूढि प्रौढिमालब्धगर्विणे।
नमस्ते सर्वभक्ष्याय परमामृतलाभिने॥25॥

भोगिनी-कुण्डलिनी शक्ति के रथ पर आरूढ़ होकर अर्थात् कुण्डलिनी शक्ति को जाग्रत किए हुए, प्रौढ़ता से पूर्ण विश्व

में माया रूपी बन्धन को नष्ट करने वाले को नमस्कार हो! वही स्वच्छन्द भैरव सभी का भक्षण - आत्मसात् करने वाले अमृत तत्त्व प्रदान करने वाले हैं।

भोगिनी बीज कुण्डलिनी शक्ति है। यह बीज मूलाधार से आरोहण करके सहस्रार तक पहुंचते हुए त्रिवलयात्मक रूप में व्यवस्थित है। 'भ'- भैरव की भरण रूप में निहित स्वच्छन्द शक्ति है।

You ride on the 'Bhogini' chariot, and is full of excellence. You are adorned with the moon, on your head. You consume everything, whatever exists, as you are the Divinity, as being the embodiment of transcendental immortality.(25)

न-नफकोटिसमावेश भरिताखिलसुष्टये।
नमः शक्तिशरीराय कोटिद्वितेयसङ्ज्ञिने।।26।।

'नृप्फ कोटि' - 'न' आदि से 'फ' अन्त तक, 'न' वर्ण रूप से 'फ' वर्ण रूप में समावेश करके सकल सृष्टि की रचना करने वाले, स्वच्छन्द भैरव शक्तियुक्त हैं। बहुरूपगर्भ भैरव का शरीर शक्ति स्वरूप है। अर्धनारीश्वर रूप से एक दूसरे से पूरक हैं। कोटि शब्द-पूर्णतः हैं, जिसमें सभी कुछ समा सकता है।

न फ (न+फ) - 'न' बीज समरूप समरसता है, 'प्र' पवर्ग का आदि व्यञ्जन है 'फ' बीज विस्तार, कृत्य सम्पन्न करने का वर्ण है। यह बीज कोटि – पराकाष्ठा, उच्चतम बिन्दु, श्रीचक्रमध्य बिन्दु, विमर्श रूप है। अतः 'नफ-कोटि' शिव-शक्ति का पारस्परिक एक भाव, एक प्रारूप एवं श्रीचक्र में विराजमान त्रिवलयाकार है। 'नफ बीज' योग द्वारा अन्तस्थ में जानने की प्रक्रिया है।

You are the very existence of all manifestation, from the syllables of 'na' to 'pha', which is termed as 'Malini'. This is full cylic order of the universe in its fullness. Syllable 'Na' stands for wealth and prosperity. 'Pha' stands for gliding, moving. Slowly 'Koti' is an expression of

endless continutiy. Prostration be to the enbodiment of Shakti! You are complimentary to each other as being Shiva and Shakti in one Being.(26)

म-महामोह मलाक्रान्त जीववर्गविभोधिने।
महेश्वराय जगतां नमोऽकारण बन्धवे।।27।।

महामोहात्मक मल से आक्रान्त (मलिन) होकर, जीवात्मा (मानक शरीर) को ज्ञानबोध-आत्मबोध के द्वारा प्रबुद्ध बनाने वाले के लिए नमन हो! प्राणियों के 'अकारण' – कारण रहित (स्वेच्छा स्वरूप बन्धु) होने पर महेश्वर को नमस्कार हो! अकारण (स्वतः स्फुर्ति) समस्त प्राणियों के कल्याणकर्त्ता हो!

'म+हा' बीज, 'आत्मभव' एवं विभव है। शिव का ममत्व भाव ही उसका महान स्वरूप है, जिसमें ऊष्णता भी है। ममत्व से मोह, जीवात्मा में उत्पन्न होता है; परन्तु महेश्वर का ममत्व बीज और शिव का एकरूप है। इस बीज के द्वारा अन्तस्थ में स्थित होकर जीव शिव को चक्रस्वरूप में देखता है। वही भवचक्र है।

Your very being is for evolving the embodied souls, through the Divine grace that you bestow upon them, by removing the various sheaths of ignorance and delusion. Prostrations to 'Maheshwara'/the supeme Lord of the universe. He is the 'Bandhu'– a binding force of all beings, which is a causeless emanicipation of the Lord.(27)

स-स्तेनोन्मूलन दक्षैक स्मृतये विश्वमूर्तये।
नमस्तेऽस्तु महादेव नाम्ने परस्वधात्मने।।28।।

विघ्नरूपी चोरों को उन्मूलन-नष्ट करने वाले, उस विश्वमूर्ति के लिए नमन हो, जो 'परा' अवस्था में 'स्वधा' का ही आत्मस्वरूप

है। वही विश्वाकार महादेव अपने स्वातन्त्र स्वरूप से हमारे विघ्नों को दूर करे!

'स्तेन' - 'चुर धातु' से किसी के द्रव्य के 'स्तेन' अर्थात चोरी करना है। इस का बीज स्तेन, वशीभूत एवं मोह से ग्रसित है। उस मोह को नाश करने का उपकार करने का श्रेय महादेव की कृपा दृष्टि है।

Only by remembering your name, you destory all the obstacles and hindrances, caused by the impediments of malicious forces through your grace. Be our prostrations to Mahadeva who is the 'Vishvamurti'; Mahadeva who is 'Svadha–a Vital self force', a very epithet of that name. Be our prostrations to that Vishvamurti-the 'Macro-Self', who is of the nature of material universe!(28)

र-रूग्द्राविणे महावीर्य रूरूवंशविनाशिने।
रुद्राय द्राविताशेषबन्धनाय नमो नमः।।29।।

शरीर की व्याधि और मन की आधि से द्रवित एवं मलिनता पूर्ण जीवात्मा का निदान करने वाले, महान पराक्रमी, रू रू-चीत्कार चेतावनी से युक्त, विकल्पों के दंशों का निवारण करने वाले रुद्र को नमन हो! वही रुद्र अशेष बन्धनों का नष्ट करने वाले स्वच्छन्द भगवान् रुद्र हैं। अतः 'स्वधा' शब्द से भी सम्बोधित हैं।

र - बीज, उ मात्रा से युक्त महादेव की रूद्र रूपी रौद्र ध्वनि है। यह बीज आत्म शुद्धि के लिए एकाग्र भाव धारण करने के लिए कहा गया है। इसी रुद्र की महिमा रौद्री में विद्यमान है। रुद्र मंत्र शिव का यजुर्वेदीय शब्द शरीर है।

You are the remover of all the diseases, and the destroyer of the different families of diseases. You are the 'Devata' of all prowess. You wash off all the sins, that bind the embodied soul, though the

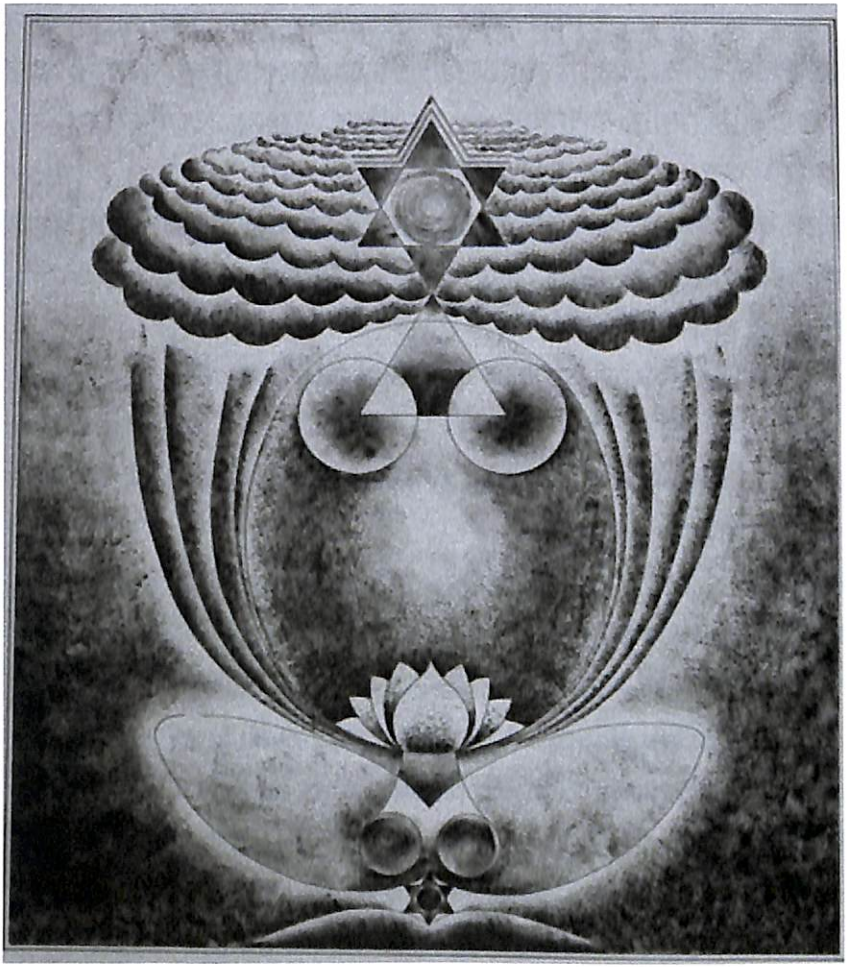

transmigration of birth and death. So repeated prostrations be to you, who is Rudra, the oneness of all the Devatas like Agni, Indra, Mitra, Varuna etc. in form.(29)

द्र-द्रवत्पररसास्वाद चर्वणोद्यतशक्तये।
नमस्त्रिदशपूज्याय सर्वकारणहेतवे।।30।।

द्रवित - टपकने वाले परम रस - पराशक्ति से द्रवीभूत अमृत के आस्वादन में सदा उद्यत करने वाले शक्ति सम्पन्न वाले त्रिदश/तीस कोटि देवताओं से सम्पूजित, अथवा द्रव्यों से पूजित, समस्त कारणों के तत्त्वसार देव को नमन हो! चर्वणोद्यत - स्वाद लेना एवं आचमन करना एवं अपने भीतर ही अपने संकल्प विकल्पों को आत्मसात करना है, यही उसकी शक्ति है। यही सभी कारणों का हेतु है।

द्रव - बीज, जड़ से चेतन होने की प्रक्रिया है। यह प्रक्रिया कुण्डलिनी शक्ति के जागरण से सम्बंधित है। यही अमृतकला भी है, जिसका सम्बंध माया तत्त्व से शक्ति तत्त्व की ओर जाने का अवरोहण है।

You are the nectraine of immortality, when you grace the devotee with your tender nature, through the Shakti of excellence revered as 'Charvanodyata', which relishes the elixir of immortality through purity. You are the primal cause of all the causes, and worshipped by the multitude of Devatas. Thrity crores in number, or worshipped by thirty 'upacharas'/conducts of Agamic worship.(30)

र-रूपातीत नमस्तुभ्यं नमस्ते बहुरूपिणे।
त्र्यम्बकाय त्रिधामान्तश्चारिणे चित्रचक्षुषे।।31।।

हे रूपातीत! नमस्कार हो तुम्हारा, बहुरूप भी है तथा कोई भी रूप रूप नहीं है जिसका, उसको नमन हो! ऐसे रुद्र भैरव तुम हो, त्र्यम्बक-तीन नेत्रों वाले स्वच्छन्दनाथ! इच्छा, क्रिया, ज्ञान

शक्तियों से आवृत्त होकर भी 'भूः भुवः स्वः' के सम्पूर्ण ईश्वर को नमस्कार हो! तुम्हारे नेत्र विचित्ररूप धारण किये हैं।

रूप - र अग्नि बीज से ऊ मात्रा सहित (शिव), पंच वायु में स्थित ध्यान का केन्द्र बिन्दु है।

Prostrations be to you, who is beyond form and with multitude of forms! You are revered as 'Tryambaka' – Rudra with three eyes. Your movements are visible in the Sun, Moon and Fire, resembling your wonderful three eyes. You abode is Triple world of 'Bhu, Bhuvah and Svah.'(31)

प- पेशलोपाय-लभ्याय भक्तिभाजां महात्मनाम्।
दुर्लभाय मलाक्रान्त चेतसां तु नमो नमः॥32॥

सहज संवित्/लावण्य युक्त भक्तों के लिए सहज रूप से प्राप्य देवता को नमस्कार हो, जो महात्माओं के हठ योग को सुगम्य भक्ति में परिवर्तित करते हैं। घोर मलों-(नित्य नैमित्तिक) दोषों से ग्रसित चित्त वाले मनुष्यों के लिए स्वच्छन्दनाथ भैरव दुर्लभ है।

पेश - रम्य आकार, आकृति का अण्ड बीज है। वही बहुरूपगर्भ है। संवित् स्वरूप ही भैरव - स्वच्छन्दनाथ बहुरूपगर्भ का रहस्य है।

For the sprirtual evolvement of the devotees, possessing the true nature of a 'Mahatman', you make their union/merger with you easier. But it is impossible for those, whose consciousness is enveloped with all evil. My postration be to you, always and ever! Your eternal seed is the essence of the Bahuroopa—multifaceted one.(32)

भ- भवद्राय दुष्टाणां भवाय भवभेदिने।
भव्यानां त्वन्मयानां तु सर्वदाय नमो नमः॥33॥

दुष्टों को संसार के बंधनों से कष्ट भोगने के लिए सृष्टि

का निर्माण करने वाले, भव्य महात्माओं को भवबंधन के पाश से छुड़ाने वाले, भव्य-ब्रह्ममार्ग (वैदिक-आगमिक मार्गों) पर चलने वालों को ब्रह्मज्ञान देने वाले बहुरूप भगवान को नमस्कार हो! ब्रह्मज्ञान के द्वारा संवित् का पूर्ण आभास एक भक्त को प्राप्त हो सकता है। यही भैरव की भीषण शक्ति है।

भव-बीज, सृष्टि बीज है, यही शिव है, जो जीव को भव्यता प्रदान करता है, तथा सर्जन की आध्यात्मिक दिव्यता का कारण हेतु भी दैदीप्यमान होता है।

You charge the evil doers within the net of worldly bonds and webs, of repeated births and deaths. The embodied souls, always in devotion and having pure consciousness are granted the highest realm of Moksha/final liberation. Prostrations be to you, O Bhava, as Rudra Devata!

Bhagavana Bahurupa, you bestow upon them all peace and auspiciousness, as they have identified their 'Atman' with your Eternal being! Their state of mind is 'Tanmaya'—absorbed in that/Bahurupa-garbha.(33)

अ- अणूनां मुक्तये घोर घोर संसारदायिने।
घोरातिघोरमूढानां तिरस्कर्त्रे नमो नमः।।34।।

अणु/बद्ध - जीवात्माओं को बंधन से मुक्त कराने वाले, घोरतम संसार में बद्ध जीवों को घोर, घोरतर एवं घोरतम अर्थात् रजस् से तमस् भावों की प्रकृति से पाश युक्त आत्माओं के स्वभाव के निहंता सद्योजात स्वच्छन्द भैरव बहुरूप गर्भ को नमस्कार हो!

अणु के आणविक आकार- सूक्ष्मातिसूक्ष्म बीज त्रिगुणात्मक गुणों से युक्त हैं। अणु में ही महान् प्रत्यभिज्ञा शक्ति रहस्यात्मक रूप में वास करती है। स्वच्छन्द भैरव की कृपा से अणु/नर/जीवात्मा

के आणवीय मल/दोषों का क्षय होता है। वही अणु जीव, शिव से साक्षात्कार होकर शिवमय अवस्था को प्राप्त करता है।

Be our repeated prostrations to you, who has created the worlds of horrifying nature, only for making the bonded souls free after experiencing the fruits/results of their actions! You remove all the shackles of ignorance from the bewildered and ignorant souls, making them undergo the cycle of all the transmigration of soul, which is repeated experience of births and deaths, till their souls get purified.(34)

इति

Thus concluded the Bahuroopagarbha Stotram.

फलश्रुतः

इत्येवं स्तोत्रराजेशं महाभैरवभाषितम्।
योगिनीनां परं सारं न दद्याद्यस्य कस्यचित्॥1॥

फलश्रुति

यह 'स्तोत्र-राजराजेश्वर' महाभैरव के द्वारा वर्णित है। योगियों के लिए स्तोत्र परम एवं परात्परसार रूप है। अन्यत्र किसी को भी यह स्तोत्र नहीं देने योग्य है।

This Master Stotram has been narrated by the 'Maha-Bhairava'. This is the quintessence, pure and concentrated in laudation and should not be revealed to any such person ....,(1)

अदीक्षिते शठे क्रूरे निःसते शुचिवर्जिते।
नास्तिके च खले मूर्खे प्रमत्ते विप्लुतौजसे॥2॥

शठ/ठग, क्रूर, पवित्रता से शून्य, नास्तिक, दुष्ट, मूर्ख, प्रमाद युक्त, तेजस् हीन व्यक्ति को यह स्तोत्र कभी भी नहीं देना चाहिए। जिसकी दीक्षा भी नहीं हुई हो, ऐसे व्यक्त को भी नहीं, जो विवेक शून्य हो, इस स्तोत्र से अपरिचित रखना चाहिए।

.... who is not initiated into the Shaivistic path. He should not be a crafty, cruel, liar, impure, atheist, mischievous, foolish, careless with intoxication and devoid of vigour ....., (2)

गुरूशास्त्रसदाचार दूषके कलहप्रिये।
निन्दके चुम्भके क्षुद्रेऽसमयज्ञे च दाम्भिके॥3॥

गुरू, शास्त्र, सदाचार में दोष निकालने वाले, कलह को चाहने वाले, निन्दा करने में रत, क्षुद्र, कामासक्त, असमयज्ञ-समयाचार से अपरिचित तथा आत्माश्लाघनीय-धार्मिक पाखण्डी को कभी भी यह स्तोत्र नहीं देना चाहिए।

.....who is vitiating his Guru, speeaking ill of the Scriptures, and corrupt in word and deed, this Stotra should not be given to that person. Also who likes to be involved in strife and quarrel. Those who are with blaming nature, lustful, narrow minded, not vigilant to and aspirant of the 'Samaya' system of Shaivism and being hypocritical/ deceitful.(3)

Note: 'Samaya' system of Shaivism holds Bhakti-devotion with ecstatic mood, in high esteem. It is the core of the 'Pooja' with devotion, which is Bhakti in practice to the Svachchanda Bhairava.

दाक्षिण्य रहिते धर्महीने च गर्विते।
भक्तियुक्ते पदातव्यं न देयं परदीक्षिते॥4॥

नम्रता, शिष्टता से रहित, दक्षिणा रूपी सामंजस्य से रहित, अधर्मी, गर्व से ग्रसित तथा दूसरी विधियों - क्रमों मे दीक्षित व्यक्ति को यह स्तोत्र नहीं देना चाहिए; अपितु: भक्ति भाव से युक्त पुरुष को ही इस स्तोत्र से दीक्षित करना चाहिए।

This Stotram should not be given to those, who are against 'Dharma' and are proud. Also not given to those, who are devoid of politeness and initiated into other paths. The knowledge should only be parted to the sincere devotees of Shiva.(4)

पशूनां सन्निधौ देवि! नोच्चार्य सर्वथा क्वचित्।
अस्य वै स्मृतिमात्रेण विघ्नानश्यन्त्यनेकशः॥५॥

हे देवी भट्टारिके। उस व्यक्ति को भी दीक्षित नहीं करना चाहिए, जिसका व्यवहार पशुओं के सदृश हो। इस स्तोत्र का उच्चारण ऐसे व्यक्ति के लिए निषेध है। इस स्तोत्र के केवल स्मृतिमात्र से ही, अनेकों अनेक विघ्नों का नाश होता है।

O Devi! This Stotram should never be recited before those, who behave like animals, and are in proximity with the animal nature of existence. Only through the rememberance of this Stotram, the obstacles of various forms/natures get destroyed instantaneously.....,(5)

गुह्यका यातुधानाश्च वेताला राक्षसादयः।
डाकिन्यश्च पिशाचाश्च क्रूरसत्त्वाश्च पूतनाः॥6॥

कुबेर के अनुचर गुह्यक, यातुधान-पिशाच, वेताल-शव पर अधिकार रखने वाले भूत, राक्षस आदि, डाकिनी-पैशाची शक्ति, क्रूर स्वभाव वाले, सात्त्विक-पशुओं को भय देने वाले, पूतना-वक्षस्थल में विष धारण करने वाली पूतनी को भी यह मंत्र नहीं देना चाहिए।

Guhyaka – attendants of Kubera; Yatudhana – evil spirits; Vetatala – goblins, Rakshasas etc., Dakini – women spirit with red and white eyes, having conceit in them, Pishacha – a diabolic spirit, cruel ghosts, wicked beings, Putana – women spirits with venom in their breats. (These evil forces get vanished).(6)

नश्यन्ति सर्वे पठितस्तोत्रस्यास्य प्रभावतः।
खेचरी भूचरी चैव डाकिनी शाकिनी तथा॥7॥

इस स्तोत्र के पाठ करने मात्र से ही, उन सभी का तामसिक प्रभाव नष्ट होता है। खेचरी - आकाश गामिनी आसुरी शक्तियां भूचरी-भूचल में भ्रमण करने वाली तामसिक शक्तियां,

डाकिनी–त्रस्तदायक शक्तियां एवं शाकिनी–हरित वर्ण वाली पिशाचनी आदि .....

All these evil spirits get destroyed with the strong effect of this Stotram. All Khechari' – moving spirits in the sky, 'Bhuchari' – spirits on the earth, 'Dakini' with Nine forms being all terific in nature, and 'Shakini' – fairy looking demon of green hue get immediately vanished through this potent Stotra.(7)

ये चान्ये बहुधा भूता दृष्टसत्त्वाभयानकाः।
व्याधिदौर्भिक्षदौर्भाग्य मारीमोह विषादयः॥8॥

भूत, दुष्ट, पशुओं को सताने वाले, भयानक व्याध शिकारी, दुर्भिक्ष एवं अकाल, दुर्भाग्य, महामारी, मोह, विषाद ....

Moreover, multitude of the 'Bhutas'—wicked persons, ferrocious animals keep away themselves, on listening to this Stotra. Critical ailments, drought, evil omens/misfortune, epidemic, delusion and effect of poison never stand before the power of this Stotram.(8)

गजव्याघ्राश्च ये घोरा पलायन्ते दिशोदश।
सर्वेदुष्टाः प्रणश्यन्ति चेत्याज्ञा पारमेश्वरी॥9॥

हाथी, व्याघ्र तथा हिंसक पशु दूर-दूर दिशाओं में भाग जाते हैं। परम् भट्टारिका परमेश्वरी की आज्ञा से सभी दुष्टों को संहार होता है।

Elephants, tigers and wild beasts move to ten different directions, when the Sadhaka recites this Stotram. By the authority of 'Parmeshvari', all the evil doers are destroyed, vanquished.(9)

इति श्रीबहुरूपगर्भस्तोत्रं सम्पूर्णम्,
इति श्री बहुरूपगर्भ स्तोत्र समाप्त।

Thus Shri Bahurupa garbha Stotram is concluded.

सर्वत्र इति शुभम्

May it be beneficient every where!

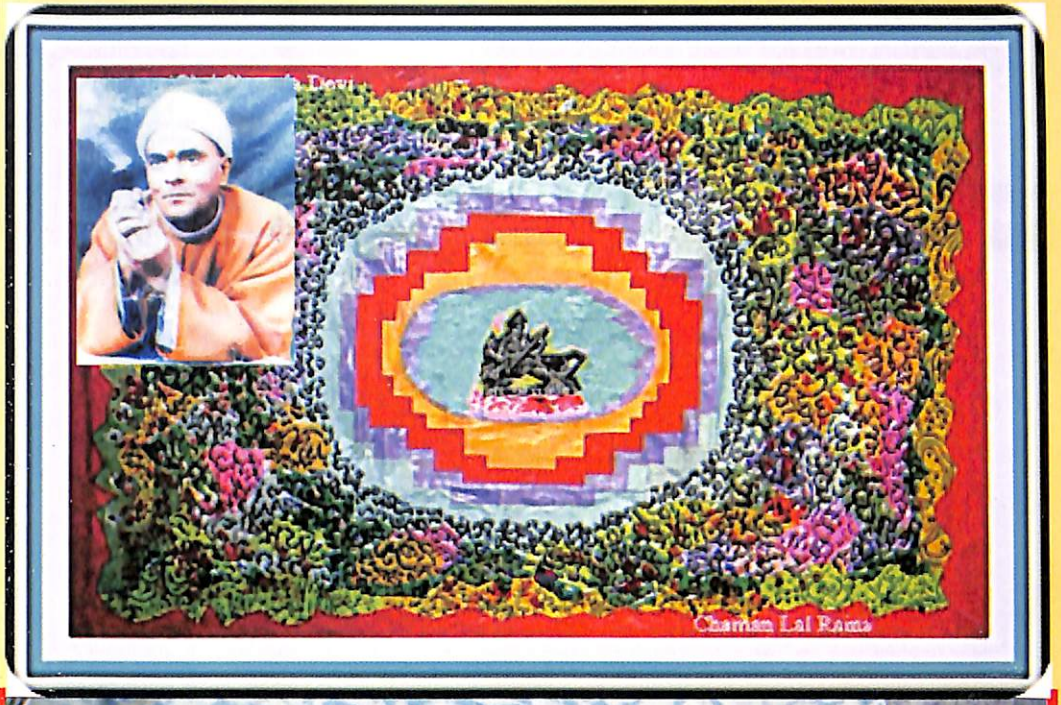

पॉवर प्रिन्टर्स द्वारा मुद्रित, 23272445, 9717411800

ANAND
DHAM